



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 356]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अक्टूबर 3, 2008/आश्विन 11, 1930

No. 356]

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 3, 2008/ASVINA 11, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर, 2008

अंतिम जांच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

सं. 10/7/2006-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क या अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

मामले की पृष्ठभूमि

2. भारत में घरेलू उत्पादक द्वारा दायर एक आवेदन के आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है), ने 13-9-1996 को पाटनरोधी जांच शुरू की और 14-10-1997 की अधिसूचना सं. 47/एडीडी/आईडब्ल्यू के तहत थाईलैंड, अमरीका और कोरिया गणराज्य के मूल के या वहां से निर्यातित एक्रोलिक फाइबर (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है, के आयात पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए अपने अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए। बाद में 26-4-1999 की अधिसूचना सं. 21/1/99-डीजीएडी के तहत मध्यावधि समीक्षा की गई थी और 19-4-2000 के अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 21/1/99-डीजीएडी के तहत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी। 7-8-2001 की अधिसूचना सं. 26/1/2001-डीजीएडी के तहत पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा शुरू की गई थी और अंतिम जांच परिणाम 6-8-2002 की अधिसूचना सं. 26-1-2001-डीजीएडी के तहत जारी किए गए थे। संबद्ध वस्तु पर 9-10-2002 की सी.शु. अधिसूचना सं. 106/2002-सी.शु. के तहत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क पुनः लगाया गया था। प्राधिकारी ने 6-7-2006 को मध्यावधि समीक्षा शुरू की और 3-10-2007 की अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 15-13-2006 के तहत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी।

3. एक्रोलिक फाइबर विनिर्माता फोरम, नई दिल्ली ने भागीदार कंपनियों अर्थात् मै. इंडियन एक्रोलिक्स लि. और मै. वर्धमान एक्रोलिक्स लि. के जरिए थाईलैंड, कोरिया और अमरीका से

एक्रीलिक फाइबर के आयातों पर पूर्व में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा का अनुरोध करते हुए सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और वसूली एवं क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 के नियम 23 के साथ पठित वर्ष 1995 में यथासंशोधित सी.शु. टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 (5) के अंतर्गत एक याचिका दायर की। अपने आवेदन में आवेदक ने थाईलैंड और कोरिया गणराज्य के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा की जरूरत की पुष्टि की। याचिकाकर्ता ने प्रथम दृष्टया साक्ष्य के साथ यह दावा किया कि इन देशों से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने से क्षति एवं पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और उन्होंने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने और उसकी अवधि आगे और 5 वर्ष तक बढ़ाने का अनुरोध किया है।

4. प्राधिकारी ने लागू शुल्क को जारी रखने की जरूरत की समीक्षा करने और इस बात की जांच करने के लिए कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 (5) के अनुसार 8 अक्टूबर, 2007 की अधिसूचना के तहत निर्णायक समीक्षा शुरू की।

#### प्रक्रिया

5. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

- i) समीक्षा जांच शुरू करने के बाद प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावली का उत्तर और आवश्यक सूचना मांगते हुए घरेलू उद्योग, संबद्ध देशों में समस्त ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों और ज्ञात आयातकों को अधिसूचित किया;
- ii) नियम 6(2) के अनुसार, नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ जांच की शुरुवात के बारे में सूचित किया गया था कि वे अपने-अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें।
- iii) संगत सूचना मांगने के लिए थाईलैंड और कोरिया गणराज्य के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थी।
- iv) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में थाईलैंड के केवल एक निर्यातक अर्थात् मै. थाई एक्रीलिक फाइबर ने प्रश्नावली का उत्तर दिया।
- v) वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2006 से 31 मार्च, 2007 (12 माह) की है। तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2003-2004, 2004-2005, 2005-2006 और अप्रैल, 2006-मार्च, 2007 की अवधि शामिल है।
- vi) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय, (डीजीसीआईएंडएस) से गत तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे जुटाने का अनुरोध किया गया था।

- vii) संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों ने क्षति अवधि के लिए अपनी लागत और क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है :
- मै. इंडियन एक्रिलिक लि.;  
 ख. मै. पशुपति एक्रिलोन  
 ग. मै. वर्धमान एक्रिलिक
- viii) निम्नलिखित अन्य हितबद्ध पार्टियों ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना पर अपने उत्तर प्रस्तुत किए:
- क. लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन्स;  
 ख. इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन्स;
- ix) वर्तमान जांच के लिए संगत समझी गई सीमा तक प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए समस्त विचारों और अनुरोधों पर विचार किया है ।
- x) प्राधिकारी ने सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षणार्थ खुला रखा ।
- xi) प्राधिकारी ने हुई क्षति की जांच करने और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) और आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर उत्पादन की इष्टतम लागत और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए समव सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को उई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- xii) प्राधिकारी ने नियमानुसार सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सहयोगी निर्यातक के आंकड़ों का भी सत्यापन किया ।
- xiii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों की मौखिक सुनवाई करने के लिए 25 मार्च, 2008 को एक सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, थाईलैंड के संबद्ध वस्तु के निर्यातक और अन्य हितबद्ध पार्टियों ने भाग लिया । सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाली पार्टियों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध प्रस्तुत करने का निवेदन किया गया था । हितबद्ध पार्टियों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर विचार किया गया है और जिस सीमा तक वे संगत हैं और साक्ष्य द्वारा प्रमाणित हैं, उस सीमा तक उन्हें प्रकटन विवरण में शामिल किया गया है ।
- xiv) विवरण में \*\*\* से हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

### विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"

6. मूल जांच और इस निर्णायक समीक्षा में शामिल उत्पाद एक्रिलिक फाइबर है। एक्रिलिक फाइबर सिंथेटिक पॉलीमर की एक लंबी श्रृंखला होती है जिसमें एक्रिलोनाइट्राइल का भार के अनुसार कम से कम 90% हिस्सा होता है जोकि एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन हेतु एक प्रमुख कच्ची सामग्री है। इसका वर्णन मोटे तौर पर फाइबर के रंग, लंबाई और डेनियर के अनुसार किया जाता है। इसका उपयोग परिधानों, घरेलू वस्तुओं के विनिर्माण के प्रयोजनार्थ किया जाता है और इसका काफी अधिक औद्योगिक उपयोग आदि होता है। यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय-55 के अंतर्गत वर्गीकृत है। इसे आगे और भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 के शीर्ष 550330 और 55033000 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जात है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

### हितबद्ध पार्टियों के विचार

#### मै. थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि., थाईलैंड के विचार

7. टीएफ द्वारा यह तर्क दिया गया है कि विचाराधीन उत्पाद एक्रिलिक फाइबर अर्थात् एक्रिलिक स्टेपल फाइबर ही बना हुआ है। एक्रिलिक टो फाइबर और एक्रिलिक टॉप फाइबर अलग सीमाशुल्क वर्गीकरण और बिक्री कीमत पर अंतर के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे में नहीं आता है। इसके अलावा, किसी समीक्षा में उत्पाद में संशोधन करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि प्राधिकारी ने हाल ही की अपनी समीक्षा में यह माना है कि एक्रिलिक टॉप विचाराधीन उत्पाद के दायरे में नहीं आता है। घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद के दायरे को बढ़ाने की मांग कर रहा है।

#### घरेलू उद्योग के विचार

8. दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि एक्रिलिक फाइबर का तात्पर्य एक्रिलिक स्टेपल फाइबर, एक्रिलिक टो फाइबर और एक्रिलिक टॉप फाइबर से है। इसके अलावा, एक्रिलिक फाइबर का तात्पर्य केवल एक्रिलिक स्टेपल फाइबर से ही नहीं है। किसी समीक्षा में उत्पाद को संशोधित करने की जरूरत नहीं होती है। तथापि, यह पूर्ववर्ती एवं वर्तमान समीक्षा पर लागू होता है। पूर्व में संपन्न मध्यावधि जांच में उत्पाद को सीमित करने की जरूरत नहीं थी। घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह पूर्ववर्ती जांच के रिकार्ड की जांच करें और यह दावा किया है कि किसी पार्टी द्वारा किसी अनुरोध/निवेदन के बिना और उसमें शामिल विभिन्न मुद्दों पर ध्यान दिए बिना एक्रिलिक टॉप को गलती से पूर्ववर्ती मध्यावधि समीक्षा से एवं पूर्णतः अव्यक्त तरीके से अलग रखा गया था। आगे यह दावा किया गया है कि एक्रिलिक टॉप प्राप्त करने के लिए एक्रिलिक फाइबर को आगे और प्रसंस्कृत किया जाता है। अतिरिक्त/वृद्धिकारी प्रसंस्करण लागत कुल उत्पादन लागत की बमुरिकल 3-5% बनती है। इस प्रकार, इसका तात्पर्य अलग उत्पाद से नहीं होता है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

9. प्राधिकारी ने इन तर्कों की विस्तार से जांच की। प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और इसलिए विधाराधीन उत्पाद के दायरे को समीक्षा जांच में बदलना नहीं चाहिए। प्राधिकारी का आगे यह मानना है कि वर्तमान विधाराधीन उत्पाद का दायरा वही है जैसा कि 8.8.2002 की अधिसूचना सं. 26/1/2001-डीजीएडी और 09.10.2002 की परवर्ती सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 106/2002-सी.शु. के तहत अधिसूचित निर्णायक समीक्षा जांच में विधाराधीन उत्पाद का दायरा था।

### घ. घरेलू उद्योग का आधार और क्षेत्र

10. यह याचिका इंडियन एक्रीलिक्स लिमिटेड तथा वर्धमान एक्रीलिक्स लि. द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर एक्रीलिक फाइबर मैन्युफैक्चरर्स फोरम द्वारा दायर की गई थी। जांच शुरुआत के बाद पशुपति एक्रिलोन लि. ने अपनी कति एवं लागत संबंधी सूचना दायर की।

### हितबद्ध पार्टियों के विचार

#### थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि., थाईलैंड

11. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग के संघटक ने जांच अवधि के दौरान सीधे या अपनी संबद्ध कंपनियों के जरिए संबद्ध वस्तु का आयात किया है। यह आरोप लगाया गया है कि घरेलू उद्योग ने निर्णायक समीक्षा हेतु अपने आवेदन में इस आशय की गलत घोषणा की थी कि न तो उन्होंने और न ही उनकी संबद्ध पार्टियों ने भारत में संबद्ध वस्तु का आयात किया था। तथापि, इंडियन एक्रिलिक लि. ने स्वयं थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि. से 1658 मी.ट. संबद्ध उत्पाद (जांच अवधि के दौरान 335 मी.ट. और जांच अवधि के बाद 1323 मी.ट.) का आयात किया था। इसी प्रकार, वर्धमान एक्रिलिक लि. की दो संबद्ध कंपनियों ने थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि. से 259 मी.ट. (जांच अवधि के दौरान 52 मी.ट. और जांच अवधि के बाद 207 मी.ट.)।

12. इसके अलावा यह आरोप लगाया गया है कि इंडियन एक्रिलिक्स लि. ने भी जांच अवधि के दौरान मोंट फाइबर स्पेन से 743 मी.ट. और जांच अवधि के बाद मोंट फाइबर स्पेन तथा फार्मोसा, ताइवान से 950 मी.ट. का आयात किया है। इस प्रकार 2 घरेलू उत्पादकों ने पर्याप्त मात्रा में आयात किया था और उन्होंने इस आशय की झूठी घोषणा की थी कि उन्होंने संबद्ध उत्पाद का आयात नहीं किया और इसलिए उन्हें घरेलू उद्योग माना जाना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा मामला शुरू करते समय नियम 5 का पालन नहीं किया गया है।

### घरेलू उद्योग

13. दूरी ओर घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि इंडियन एक्रिलिक्स और वर्धमान एक्रिलिक्स ने अग्रिम लाइसेंस पर संबद्ध वस्तु का आयात किया है। इसके अलावा, आईएल के मामले में सामग्री की सीमाशुल्क निकासी जांच अवधि के बाद हुई थी। निर्णायक समीक्षा के मामले में नियम 5 लागू नहीं होता है। घरेलू उद्योग ने निर्णायक समीक्षा के लिए किसी आवेदन पत्र के अभाव का भी उल्लेख किया है जबकि मध्यावधिक समीक्षा के लिए निर्धारित प्रपत्र होता है। इसके

अवलोकन से यह पता चलेगा कि कंपनियों द्वारा आयात या निर्यात से संबंधित प्रश्न पूर्णतः असंगत हैं। आगे यह दावा किया गया था कि निर्णायक समीक्षा के लिए कोई आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा किए जाने की जरूरत नहीं है। कोई हितबद्ध पार्टी आवेदन कर सकती है। यस्तुतः आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से हो सकता है।

### निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच

14. सत्यापन के बाद प्राधिकारी ने यह पाया कि इंडियन एक्रीलिक्स और वर्धमान एक्रीलिक्स ने शुल्क छूट स्कीम के अंतर्गत संबद्ध वस्तु का आयात किया है। जांच अवधि के दौरान इंडियन एक्रीलिक्स ने कोई आयात नहीं किया है और आयात हर हालत में अग्रिम लाइसेंस पर किए गए हैं जिस मामले में आयातित निविष्ट का आशय घरेलू खपत के लिए नहीं होता है अपितु निर्यात प्रयोजन के लिए होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी की यह सतत परंपरा रही है कि घरेलू उद्योग के निर्धारण हेतु अग्रिम लाइसेंस पर घरेलू उत्पादकों द्वारा किए गए आयातों पर ध्यान न दिया जाए। इसके अलावा आयात की यह मात्रा उनके खुद के उत्पादन, भारतीय उत्पादन और देश में मांग की तुलना में काफी अधिक है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता कंपनियों का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है। घरेलू उत्पादकों ने स्पष्ट तौर पर आवेदन का समर्थन किया है जिनका हिस्सा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के उत्पादन के 50% से अधिक बनता है। यह आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया है।

15. प्राधिकारी का आगे यह मानना है कि किसी निर्णायक समीक्षा में आधार की पुष्टि करना अपेक्षित नहीं होता है।

16. जांच शुरुआत के बाद पशुपति एक्रीलोन ने लागत एवं क्षति संबंधी सूचना प्रस्तुत की। इसे जांच के दौरान प्रस्तुत किया गया था। प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्धमान एक्रीलोन, पशुपति एक्रीलोन और इंडियन एक्रीलिक्स पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

### पाटन का निर्धारण

#### मै.थाई एक्रेलिक फाइबर कंपनी लि., थाईलैंड(टीएएफ)

17. केवल एक निर्यातक/विनिर्माता मै.थाई एक्रेलिक फाइबर कंपनी लि., थाईलैंड(टीएएफ) ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन भी किया गया और पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

### सामान्य मूल्य:

18. टीएफ ने प्रश्नावली का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत किया है जिसमें उनके द्वारा विनिर्मित और विक्रीत संबद्ध वस्तु की घरेलू एवं निर्यात विक्रियां दी गई हैं। प्राधिकारी ने यह पाया है कि कंपनी के प्रचालन अनिवार्यतः निर्यातानुमुखी हैं क्योंकि रिकॉर्डों के सत्यापन से यह पता चलता है कि उनके

80% उत्पादन का निर्यात समूचे विश्व में किया जाता है जबकि केवल 20% की बिक्री घरेलू बाजार में की जाती है। सामान्य मूल्य की गणना हेतु संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्रियों पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया था। उत्पादन की घटकवार लागत का भी सत्यापन किया गया और उसका मिलान कंपनी द्वारा रखी गई लेखा बहियों से किया गया था। कंपनी के लाभ एवं हानि खाते के विश्लेषण से यह पता चलता है कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की बिक्री पर समग्र लाभ कमाया है। उत्पादन लागत के संबंध में कंपनी के दावों का भी सत्यापन किया गया और कंपनी की उत्पादन लागत का निर्धारण कंपनी द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना के आधार पर किया गया है। इस प्रकार निर्धारित उत्पादन लागत के आधार पर यह पाया गया था कि घाटे वाले घरेलू सीदे घरेलू बाजार में उनकी कुल बिक्री के 20% से कम थे। आगे यह भी देखा गया था कि घरेलू बाजार में संबद्ध ग्राहकों को की गई बिक्रियां ऐसी बिक्रियों पर उचित लाभ मार्जिन के साथ दूरवर्ती आधार पर की गई थी और इसलिए सामान्य मूल्य की गणना हेतु समस्त घरेलू बिक्रियों को ध्यान में रखा गया था। उपर्युक्त सभी कारकों पर विचार करते हुए प्राधिकारी द्वारा कारखाना स्तर पर निकाला गया सामान्य मूल्य निम्नानुसार बनता है :

भारत (मी.ट.)	बहुत	विनिमय दर	अम.डॉ.
बिक्री कीमत	***	36.7351	***
छूट	***		
अंतर्देशीय भाड़ा	***		
ब्याज (ऋण लागत)	***		
सामान्य मूल्य	***		***

### निर्यात कीमत:

19. जांच अवधि के दौरान थाई एक्रिलिक ने भारत को \*\*\* मी.टन एक्रिलिक फाइबर का निर्यात किया था। जांच अवधि के दौरान भारत को हुए निर्यातों के बीजकवार व्यौरों पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया था। सत्यापन के दौरान प्रस्तुत संशोधित परिशिष्ट 2 में दिए गए व्यौरे के अनुसार प्रत्येक बिक्री सीदे के संबंध में परिशिष्ट-2 में ही कीमत समायोजनों पर विचार किया गया था। समायोजनों के उनके दावे के बारे में व्यौरों का सत्यापन कंपनी द्वारा रखे गए रिकार्डों से सत्यापन की कार्यवाही के दौरान किया गया था। प्रति इकाई आधार पर सत्यापित समायोजनों में \*\*\* अम.डॉ. का निर्यात प्रोत्साहन, \*\*\* अम.डॉ. का अंतर्देशीय भाड़ा, \*\*\* अम.डॉ. की ऋण लागत (ब्याज), \*\*\* अम.डॉ. का विदेशी भाड़ा, विदेशी बीमा \*\*\* अम.डॉ., नौवहन प्रभार \*\*\* अम.डॉ., निकासी एवं हैंडलिंग प्रभार \*\*\* अम.डॉ. और बैंक प्रभार \*\*\* अम.डॉ. शामिल हैं। इन समायोजनों की अनुमति देने के बाद प्राधिकारी द्वारा निकाली गई कारखाना निर्यात कीमत \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.टन. बनती है।

### वॉलर्टेड से पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

#### घरेलू उद्योग के विचार

20. थाई एक्रिलिक फाइबर द्वारा 110 रुपए प्रति किग्रा. की अंतर्राष्ट्रीय कीमत की तुलना में 58 रुपए प्रति किग्रा. सीआईएफ की कम कीमत पर भारतीय बाजार में एक्रिलिक फाइबर का

पाटन किया जा रहा है। यह अभ्यावेदन दिया गया है कि इस विचार को बल देने के लिए एक प्रमुख अनुसंधान एजेंसी द्वारा प्रकाशित सूचना भारतीय सीमाशुल्क ईडीआई पत्रन पर उपलब्ध है। आगे यह तर्क दिया गया है कि थाई एक्रिलिक ने चीन के बाजार से संबद्ध वस्तु को हटाकर भारतीय बाजार में एक्रिलिक फाइबर के पाटन में वृद्धि की है। यह तर्क दिया गया है कि यद्यपि जनवरी-मई, 2005 से लेकर वर्ष 2008 तक चीन जन.गण. के आंकड़ों से वर्ष 2005, 2006, 2007 और 2008 के दौरान क्रमशः 5822, 11868, 8398 और 2230 मी.टन की मात्रा का पता चलता है। तथापि, तदनुरूपी अवधि के दौरान भारत के लिए यह मात्रा क्रमशः 1322, 721, 2137 और 5282 रही है।

21. घरेलू उद्योग ने आगे यह अभ्यावेदन दिया है कि चीन में अतिरिक्त क्षमताओं की स्थापना होने से चीन को थाईलैंड से एक्रिलिक फाइबर के निर्यात में भारी गिरावट आई है। आगे यह भी तर्क दिया गया है कि जिस कीमत पर थाई एक्रिलिक फाइबर द्वारा चीन को इस उत्पाद का निर्यात किया जा रहा है, वह उस कीमत से काफी कम है जिस पर वे इसका निर्यात वैश्विक बाजार में कर रहे हैं और इसलिए वे चीन के बाजार में प्राप्त कीमत से बेहतर कीमत पर मात्रा प्राप्त करने हेतु बाजार की तलाश कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के वस्तु व्यापार सांख्यिकी आंकड़ा आधार पर भरोसा करते हुए घरेलू उद्योग ने यह दलील दी है कि चीन को हुए थाई निर्यात वर्ष 2006 में 20676 मी.ट. से घटकर वर्ष 2007 के दौरान 15793 मी.ट. हो गए और वर्ष 2008 में इसकी मात्रा में आगे और 45% की गिरावट आई। उनके तर्कों के सारांश रूप में यह दलील दी गई है कि-

- (i) थाईलैंड से एक्रिलिक फाइबर के वैश्विक निर्यातों में वर्ष 2007 को छोड़कर जब उनमें चीन के निर्यातों में कमी आने के कारण गिरावट आई थी, लगातार वृद्धि हुई है।
- (ii) थाईलैंड से चीन को हुए निर्यात की मात्रा वर्ष 2002 में लगभग 605 मी.ट. से बढ़कर वर्ष 2006 में 20,000 मी.ट. से अधिक हो गई किंतु वर्ष 2007 में इसमें गिरावट आई और वर्ष 2008 में इसमें आगे और कमी आई।
- (iii) चीन को होने वाले निर्यात किसी निर्यातक के लिए व्यवहार्य नहीं हैं क्योंकि चीन के बाजार से प्राप्ति काफी कम रहती है।
- (iv) चीन में संवर्धित क्षमता और घटी हुई मांग के कारण थाई एक्रिलिक फाइबर पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमता का सामना कर रही है।

#### थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लि. के विचार

22. भारत को हुए निर्यात की कीमत घरेलू बिक्री कीमत से वर्ष 2005 में 1% और वर्ष 2006 में 2% तक अधिक रही थी। परंतु समीक्षा अवधि के दौरान घरेलू बिक्री कीमत भारत को निर्यात की कीमत से 2% तक अधिक रही थी। वर्ष 2005 और 2006 के दौरान भारत को निर्यात कीमत अन्य देशों को निर्यात कीमत से 5% तक अधिक रही थी। तथापि, समीक्षा अवधि के दौरान अन्य देशों को निर्यात कीमत काफी अधिक रही और भारत को निर्यात कीमत तथा अन्य देशों को निर्यात कीमत के बीच अंतर घटकर मात्र 1% रह गया।



23. भारत के लिए औसत निर्यात कीमत वर्ष 2005 में 100 से बढ़कर वर्ष 2006 में 103 और समीक्षा अवधि के दौरान पुनः घटकर 100 हो गई। अन्य देशों के लिए औसत निर्यात कीमत वर्ष 2005 में 100 से बढ़कर वर्ष 2006 में 103 और समीक्षा अवधि के दौरान 104 हो गई। थाईलैंड में औसत घरेलू बिक्री कीमत वर्ष 2005 में 100 से बढ़कर वर्ष 2006 में 102 और समीक्षा अवधि के दौरान आगे और बढ़कर 104 हो गई। इस प्रकार जहां अन्य देशों के लिए औसत निर्यात कीमत और थाईलैंड में औसत घरेलू बिक्री कीमत में समुची क्षति अवधि के दौरान वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है, वहीं भारत के लिए औसत निर्यात कीमत में वर्ष 2006 में बड़ोसरी और समीक्षा अवधि के दौरान गिरावट प्रदर्शित होती है।

24. आगे यह तर्क दिया गया है कि अन्य देशों में उसकी मजबूत उपस्थिति बनी हुई है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में आपूर्तियों को इन बाजारों से हटाकर भारत में किए जाने की संभावना नहीं है क्योंकि भारत के लिए और अन्य देशों के लिए निर्यात कीमत के बीच कोई खास अंतर नहीं है। अद्यपि भारत को निर्यातित मात्रा में कुछ बड़ोसरी से इफ्तार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, घरेलू बिक्री कीमत अधिक है और निर्यातक ने समीक्षा अवधि के दौरान घरेलू बाजार पर अधिक ध्यान दिया है और इसके द्वारा घरेलू बाजार और अन्य देश के बाजारों पर ध्यान जारी रखने की संभावना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए यह पता चलता है कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में थाईलैंड से आयातों की मात्रा काफी अधिक रहने की संभावना नहीं है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि कीमत में कोई कटौती नहीं हुई है और भारत तथा अन्य देशों के लिए निर्यात कीमत में अंतर काफी कम रहा है और थाईलैंड में घरेलू बिक्री कीमत भारत के लिए निर्यात कीमत से अधिक है, निर्यातक द्वारा शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में भारत के लिए निर्यात कीमत घटाए जाने की संभावना नहीं है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

25. इस बात की जांच करने के लिए कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में भविष्य में पाटन जारी रखने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, निर्यातक की बिक्री मात्रा और घरेलू बाजार में उसकी कीमत एवं तीसरे देश के निर्यात बाजारों की प्रवृत्ति की प्राधिकारी ने जांच की है। घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों पर भी विचार किया गया है।

26. प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि थाई एकीकृत ने जांच अवधि के दौरान पाटित कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तु की बिक्री करना स्वीकार्य किया है, पाटन जारी रखने की पुष्टि होती है। अतः प्राधिकारी आगे यह मानते हैं कि इस अवधि के दौरान पाटनरोधी शुल्क लागू रहने के बावजूद पाटित कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है।

27. प्राधिकारी ने भारत को संबद्ध वस्तु के थाई निर्यातों के संबंध में वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों का अवलोकन किया जिससे यह पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान सीआईएफ निर्यात कीमत 2.08 अम.डॉ. प्रति किग्रा. थी जबकि थाई एकीकृत के द्वारा और परकीर्ण स्थापन के अनुसार यह 2.03 अम.डॉ. प्रति किग्रा. बती थी।

28. प्राधिकारी द्वारा वर्ल्ड ट्रेड एटलस में दर्शाए गए आंकड़ों के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि वर्ष 2005-06 के दौरान चीन जन.गण. को थाई मूल के एकीलिक फाइबर का निर्यात 19221 मी.ट. का हुआ था, जो वर्ष 2006-07 में घटकर 15,247 मी.ट. हो गया और वर्ष 2007 में घटकर 8592 मी.ट. हो गया। जहां तक थाइलैंड से चीन के लिए विचाराधीन उत्पादन की औसत इकाई कीमत का संबंध है, यह वर्ष 2005-06 में 1.77 अम.डॉ. प्रति कि.ग्रा. और वर्ष 2006-07 में 1.95 अम.डॉ. प्रति कि.ग्रा. रही थी जबकि इसी अवधि के दौरान भारत के लिए निर्यात कीमत क्रमशः 1.83 अम.डॉ. और 2.08 अम.डॉ. प्रति कि.ग्रा. रही थी।

29. भारत में और उसके आस-पास के अन्य गंतव्यों के लिए कीमत की उचित तुलना भारत के लिए कीमत के साथ करने के लिए उत्पादक/निर्यातक (थाई एकीलिक) से प्राधिकारी द्वारा यह अनुरोध किया गया था कि वह जांच अवधि के दौरान और जांच अवधि के बाद तीसरे देशों के लिए निर्यात आंकड़ों के ब्यौरे उपलब्ध कराएं। प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के अवलोकन से यह पता चला कि भारत के लिए \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. की इकाई कीमत की तुलना में उन्होंने चीन को \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. की इकाई कीमत पर निर्यात किया था। इसके अलावा जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए \*\*\* मी.ट. की कुल निर्यात मात्रा की तुलना में चीन को \*\*\* मी.ट. के निर्यात किए गए थे। तथापि, जांच अवधि के बाद अर्थात् वर्ष 2007-08 में यद्यपि, भारत के लिए निर्यात मात्रा बढ़कर \*\*\* मी.ट. हो गई, तथापि, चीन जन.गण. के संबंध में यह घटकर \*\*\* मी.ट. हो गई। प्रकटन विवरण पर अपने अनुरोध में ही टीएएफ ने इस स्थिति को न केवल स्वीकार किया है अपितु मलेशिया के लिए अपनी कीमत में भारी गिरावट की भी पुष्टि की है। उन्होंने आगे यह दलील दी है कि चीन और मलेशिया के बाजारों में उन्हें हुए घाटे की भरपाई इंडोनेशिया, ईरान, दक्षिण कोरिया, यूएसए, हांगकांग तथा वियतनाम के बाजारों को निर्यात बढ़ाकर की गई है। यह भारत में लागू पाटनरोधी उपायों की अप्रत्यक्ष स्वीकारोक्ति है, यदि ऐसा न होता हो यह बेशी मात्रा पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में आ गई होती।

29-क एक अन्य तथ्य जो प्राधिकारी की जानकारी में आया है वह थाइलैंड में एकीलिक फाइबर पर शुल्क 10% से घटकर 1% करने का है। जैसी कि विदेश व्यापार विभाग, थाइलैंड ने सूचना दी है जिसमें थाइलैंड में घरेलू बिक्री की कीमत से प्रत्यक्ष कमी आई है। अतः भारत के लिए अधिक बिक्री कीमत रखने के निर्यातक के दावे के अनुसार भारत में कोई पाटन नहीं हुआ है। तथापि, स्थिति इसके विपरीत पाई गई है क्योंकि टीएएफ की खुद की स्वीकारोक्ति के अनुसार उनके द्वारा पाटित कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तु की बिक्री की जा रही है।

30. अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस तर्क में कुछ दम है कि कीमतों में आगे और गिरावट आ रही है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने या उसमें कमी किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने या उसकी मात्रा में वृद्धि होने जा रही है।

31. प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए ये अनुरोध कि जांच अवधि के बाद चीन को हुई आपूर्तियों में मात्रा के रूप में पर्याप्त कमी आई है, वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध सूचना और प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना एवं मौके पर किए गए दौरे के दौरान सत्यापित सूचना से कम्प्लेक्स मिलती-जुलती है। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग का यह दावा कि थाई एकीलिक फाइबर के भारत को निर्यात 58 रुपए प्रति कि.ग्रा. की कीमत पर किए जा रहे हैं, पुष्टि योग्य नहीं है। तथापि, डब्ल्यू टी ए के अनुसार प्रवृत्ति के

सत्यापित आंकड़ों से यह पता चलता है कि थाई निर्यातकों के पास उपलब्ध बेसी क्षमता और चीन के बाजार को घटी हुई आपूर्ति के कारण विद्यारत्नीन उत्पाद का मार्ग बदलकर उसे भारत में भेजने की पूरी-पूरी संभावना है।

32. प्राधिकारी यह भी निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तु का आना जारी रहने का एक कारण संभवतः यह हो सकता है कि भारत में उसका निर्यात अग्रिम लाइसेंस पर किया जाता है जिसमें कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाता है। तथापि, इस पहलू का सत्यापन प्राधिकारी द्वारा नहीं किया जा सकता क्योंकि संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक ने सहयोग नहीं किया है और समीक्षा जांच के लिए प्रस्तावली का उत्तर दायर नहीं किया है।

32-क प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध सूचना के अनुसार वर्ष 2004-05, 2005-06 तथा 2006-07 (जांच अवधि) की अवधियों के दौरान चीन के लिए थाई मूल की पीयूसी की निर्यात कीमतें क्रमशः 1.75 अम.डा. प्रति कि.ग्रा., 1.77 अम.डा. प्रति कि.ग्रा. तथा 1.95 अम.डा. प्रति कि.ग्रा. रही थीं। इसी अवधि के दौरान भारत के लिए निर्यात कीमतें क्रमशः 1.69 अम.डा. प्रति कि.ग्रा., 1.83 अम.डा. प्रति कि.ग्रा. तथा 2.08 अम.डा. प्रति कि.ग्रा. रही थीं। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विभिन्न गंतव्यों के विश्लेषण करते समय प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि क्षति अवधि से लेकर जांच अवधि के दौरान जिन कीमतों पर भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया गया था वे चीन के निर्यातित पीयूसी की कीमतों से अधिक थीं जिससे स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि वे भारत को उन कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात करने में सक्षम हैं जिन कीमतों पर वे चीन को निर्यात कर रहे हैं और इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क में कमी आने की स्थिति में पाटन मार्जिन बढ़ने की संभावना है। इसके अलावा, उनके खुद के अनुसंधानों के अनुसार जांच अवधि के दौरान फिलीपींस, नेपाल, हांगकांग और पाकिस्तान के लिए कीमतें भारत के लिए कीमतों से कम हैं जिससे प्राधिकारी की इस संका की पुष्टि होती है कि पाटनरोधी शुल्क के वर्तमान स्तर को कम किए जाने की स्थिति में कम कीमत वाली पीयूसी भारत में आ सकती है।

### थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातक

#### सामान्य मूल्य

33. इस समीक्षा जांच के उत्तर में थाईलैंड के किसी निर्यातक में प्राधिकारी के समक्ष कोई अनुरोध नहीं किया है। अतः सामान्य मूल्य देश विशिष्ट और न कि निर्यातक विशिष्ट होने के कारण प्राधिकारी ने थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातकों के लिए थाईलैंड हेतु सहयोगी निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य को अपनाया है।

#### निर्यात कीमत

34. प्राधिकारी द्वारा निम्न निर्यात कीमत का निर्धारण सहयोगी निर्यातक के संबंध में अनुमत समायोजनों के अनुसार समायोजनों की अनुमति देने के बाद जांच अवधि के दौरान भारत को थाईलैंड से सहयोगी निर्यातक के निर्यात आंकड़ों के आधार पर थाईलैंड से न्यूनतम सीमा मूल्य के

आधार पर किया गया है। प्राधिकारी द्वारा थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातकों के लिए निकाली गई कारखाना निवल निर्यात कीमत \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनती है।

### कोरिया गणराज्य के लिए पाटन मार्जिन

#### सामान्य मूल्य

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य के किसी भी निर्यातक ने कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। चूंकि उक्त देश में उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा वास्तविक घरेलू बिक्री कीमत के बारे में सूचना, तीसरे देश को हुए निर्यातों से संबंधित सूचना या कोरिया गणराज्य में उत्पादन लागत तथा प्रश्नावली के अनुसार अन्य सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर विश्वास किया है। किसी उत्तर के अभाव में याचिकाकर्ताओं ने यह दावा किया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण और पाटन मार्जिन की परवर्ती गणना हेतु उत्पादन की अनुमानित लागत के आधार पर परिकलित सामान्य मूल्य को ध्यान में रखा जाए। प्राधिकारी ने कोरिया गणराज्य में विचाराधीन उत्पाद की घरेलू बिक्री कीमत जानने के लिए विभिन्न आंकड़ा आधार प्राप्त करने की भी कोशिश की, किंतु ऐसी कोई सूचना उपलब्ध नहीं थी।

36. कोरिया गणराज्य के निर्यातकों की ओर से निर्धारित प्रपत्र में और दंग से किसी उत्तर के अभाव में और कोरिया गणराज्य में घरेलू बिक्री कीमत की किसी ठोस सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(8) के अनुसार उत्पादन लागत का अनुमान लगाकर परिकलन के आधार पर कोरिया गणराज्य में सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् एक्रिलोनाइट्राइल (एसीएन) और मिथाइल ऐसीटेट (एमए) की डीजीसीआईएंड एस कीमतों और इन कच्ची सामग्रियों के लिए सर्वोत्तम खपत संबंधी कारकों एवं घरेलू उद्योग में से घरेलू विनिर्माता की संगत अवधि के दौरान सर्वोत्तम ज्ञात अनुमानित परिवर्तन लागत, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक लागत को अपनाकर किया गया है और इस प्रकार निर्धारित उत्पादन लागत में उचित लाभ मार्जिन जोड़ा गया है। प्राधिकारी द्वारा कोरिया गणराज्य के लिए इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनता है।

#### निर्यात कीमत

37. प्राधिकारी ने कोरिया गणराज्य से आयातों के संबंध में डीजीसीआईएंड एस से सौदेवार आंकड़ों पर ध्यान दिया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस की सूचना से जांच अवधि के दौरान कोरिया गणराज्य से 495 मी.ट. एक्रिलिक फाइबर के आयातों का पता चलता है। प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध सूचना के अनुसार कोरिया गण. से भारत को संबद्ध वस्तु के निर्यातों के ब्यौरे का भी अवलोकन किया। डब्ल्यू टी ए के अनुसार जांच अवधि के अनुसार भारत को संबद्ध वस्तु के केवल 21 मी.ट. का निर्यात दर्शाया गया है। इसके अलावा, डब्ल्यूटीए के अनुसार दक्षिण कोरिया ने कलेंडर वर्ष 2007 के दौरान विश्व मर को संबद्ध वस्तु के 15956 मी.ट. का निर्यात किया था, जबकि इसी अवधि के दौरान भारत को 362 मी.ट. एक्रिलिक फाइबर का निर्यात किया गया था। अतः मात्रात्मक विश्लेषण हेतु प्राधिकारी यह उचित मानते हैं कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर भरोसा किया जाए और वह मात्रा एवं क्षति विश्लेषण हेतु डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों पर भरोसा करने का प्रस्ताव करते हैं। इसके अलावा, डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों के अनुसार कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु की सीआईएफ

आयात कीमत 94302 भा.रु. (2068 अम.डॉ.) प्रति मी.ट. थी जो डब्ल्यू टी ए में दर्शाए गए अनुसार 2.06 अम.डॉ. प्रति किग्रा. की सीआईएफ कीमत के अनुरूप है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि डब्ल्यू टी ए के अनुसार कैलेंडर वर्ष 2007 के दौरान विश्व भर के लिए कोरियाई मूल के संबद्ध वस्तु की सीआईएफ कीमत 2.16 अम.डॉ. प्रति किग्रा. थी जबकि इसी अवधि के दौरान भारत के लिए सीआईएफ निर्यात कीमत 2.13 अम.डॉ. प्रति किग्रा. रही थी। इस प्रकार प्राधिकारी निम्न निर्यात कीमत के निर्धारण और पाटन एवं प्रति मार्जिन के परवर्ती निर्धारण हेतु डीजीसीआईएनएस के आंकड़ा स्रोत के अनुसार सीआईएफ कीमत को भरोसेमंद कीमत मानते हैं क्योंकि विश्व भर के लिए कोरियाई संबद्ध वस्तु की कीमत भारत के लिए कीमत से अधिक है। निर्यात प्रोत्साहन, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, अंतरदेशीय भाड़े, पत्तन व्यय, बैंक प्रभार के लिए समायोजन करने के बाद प्राधिकारी द्वारा संगणित कारखाना निर्यात कीमत \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनती है। प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार संगणित पाटन मार्जिन \*\*\* अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनता है।

### कोरिया गणराज्य से पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना घरेलू उद्योग के विचार

38. यह तर्क दिया गया है कि इन अवधियों के दौरान चीन को कोरियाई संबद्ध वस्तु के निर्यात में पर्याप्त गिरावट आई है। संयुक्त राष्ट्र वस्तु व्यापार आंकड़ा संग्रह पर भरोसा करते हुए यह तर्क दिया गया है कि चीन को कोरियाई संबद्ध वस्तु के निर्यात जो वर्ष 2005 में 16808 मी.ट. के हुए थे, वे वर्ष 2006 और 2007 के दौरान घटकर क्रमशः 958 मी.ट. और 10259 मी.ट. रह गए। आगे यह तर्क दिया गया है कि उनके वैश्विक निर्यात जो वर्ष 2005 के दौरान 21558 मी.ट. के हुए थे, वर्ष 2006 और 2007 में घटकर क्रमशः 15956 मी.ट. और 16646 मी.ट. रह गए।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

39. घरेलू उद्योग के अनुरोधों को नोट करने और वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उल्लिखित आंकड़ों का अवलोकन करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि चीन जन.गण. को कोरिया संबद्ध वस्तु का निर्यात 20177 मी.ट. का हुआ था जो वर्ष 2005-06 और 2006-07 में घटकर क्रमशः 15135 मी.ट. और 9408 मी.ट. हो गया। यद्यपि वर्ष 2007-08 के दौरान यह मामूली बढ़कर 11575 मी.ट. हो गया। प्राधिकारी यह भी निष्कर्ष निकालते हैं कि चीन के लिए कोरियाई मूल के एक्रेलिक फाइबर की कीमत वर्ष 2005-06 में 1.28 अम.डॉ. प्रति किग्रा. से बढ़कर वर्ष 2006-07 के दौरान 1.91 अम.डॉ. प्रति किग्रा. हो गई, किंतु वर्ष 2007-08 के दौरान घटकर 1.76 अम.डॉ. प्रति किग्रा. हो गई और इस प्रकार कोरियाई निर्यातकों को उच्चतर कीमत प्राप्त करने के लिए उत्पाद का मार्ग बदलकर भारतीय बाजार में लाने का अवसर मिल गया और वह भी पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने या उसे वर्तमान स्तर से कम किये जाने की स्थिति में पाटित कीमत पर।

40. अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आज की तारीख को लागू पाटनरोधी शुल्क कारगर रहा है और इसमें कमी किए जाने से कोरिया से पाटित आयात भारत में आने शुरू हो जाएंगे।

पाटन मार्जिन

41. पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु कारखाना स्तर पर निर्धारित सामान्य मूल्य की तुलना कारखाना स्तर पर निर्धारित संबंधित निवल निर्यात कीमत के साथ की गई है जो निम्नानुसार है:

पाटन मार्जिन की गणना	सामान्य मूल्य अम.डॉ./मी.ट.	निर्यात कीमत अम.डॉ./मी.ट.	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
मे. थाई एक्रिलिक, थाइलैंड	***	***	***	2-7%
थाइलैंड के अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	14-19%
कोरिया गण. के निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	7-12%

42. प्राधिकारी द्वारा संबद्ध देशों से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है।

क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारणहितबद्ध पार्टियों के विचारघरेलू उद्योग के विचार

43. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

- संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा हाल ही में जारी किए गए प्रकटन विवरण में व्यक्त अवधारणा के अनुसार विदेशी उत्पादकों द्वारा क्षमता बढ़ाए जाने के कारण आयात की मात्रा में वृद्धि होने की काफी संभावना है।
- घरेलू बाजार में बिक्री कीमत आयात कीमत से प्रत्यक्षतः संबंधित है। घरेलू उद्योग को विभिन्न स्रोतों से न्यूनतम आयात कीमत पर प्रतिक्रिया देनी होती है। पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने का तात्पर्य यह है कि बाजार में इन देशों से एक्रिलिक फाइबर की कीमत कम होगी। परिणामतः घरेलू उद्योग को बिक्री कीमत कम करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।
- बिक्री कीमत में किसी गिरावट का घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद लाभ की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- देश में इस उत्पाद के सतत पाटन को देखते हुए दो अन्य कंपनियों-आईपीसीएल तथा कन्सोलिडेटेड फाइबर को एक्रिलिक फाइबर से संबंधित अपने प्रचालन बंद करने के लिए बाध्य किया गया है। आईपीसीएल द्वारा एक्रिलिक फाइबर में ऋणात्मक मूल्यवर्धन

का सामना किया जा रहा है। आबद्ध रूप से उत्पादित एक्कीमोनाइट्रायल की कीमत पर विचार करते हुए कंपनी ने अपेक्षाकृत अनात्मक मूल्यवर्धन का सामना किया। इसके अलावा कम्सोलिडेटेड फाइबर द्वारा केवल एक्कीलिक फाइबर का उत्पादन किया जा रहा था और उसे अपना उत्पादन बंद करने के लिए बाध्य किया गया है। इन दोनों कंपनियों को क्षति देश में इस उत्पाद के सतत पाटन के कारण हुई थी।

- v. घरेलू उद्योग को देश में इस उत्पाद के सतत पाटन से क्षति हुई है। इनमें से अधिकतर श्रोतों पर या तो पाटनरोधी शुल्क लागू है या हाल ही में यह शुल्क समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार इस निर्णायक समीक्षा जांच में घरेलू उद्योग की क्षति को मौजूदा शुल्क के आलोक में देखना अपेक्षित है।
- vi. भारत में एक्कीलिक फाइबर की मांग में कमी आई है। तथापि, जहां, किम्ब में एक्कीलिक फाइबर की क्षमता मांग से काफी अधिक है वहीं संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा अपनी घरेलू मांग में वृद्धि से अधिक क्षमताओं का विस्तार किया जा रहा है जो स्पष्ट तौर पर निर्यात बाजार पर विचार करते हुए हो रहा है। क्षमता में इस प्रकार के विस्तार से अन्य उत्पादकों के लिए स्वाभाविक खतरा उत्पन्न हो गया है।
- vii. आयात अभी भी पाटित कीमतों पर हो रहे हैं और वर्तमान जांच में पाटित आयातों की मात्रा पर्याप्त स्तर पर बनी रही है। मूल जांच के समय जो परिस्थितियां थीं वे परिस्थितियां आज भी वैसी ही हैं। परिस्थितियों में कोई अंतर नहीं आया है जिससे यही पता चलता है कि पाटन की पुनरावृत्ति उच्च स्तर पर होगी।
- viii. थाईलैंड में उत्पादक द्वारा सृजित क्षमता उनके स्थानीय बाजार में मांग से काफी अधिक है। याचिकाकर्ता द्वारा तीसरे देश के बाजार को किए जा रहे निर्यातों की भारी मात्रा से यह स्पष्ट हो जाता है कि पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति की स्थिति में आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होगी। इसके अलावा, घरेलू उद्योग का यह मानना है कि याचिकाकर्ता द्वारा भी अपनी क्षमता का विस्तार किया जा रहा है।
- ix. निर्यातक के तीसरे देशों को हुए निर्यात भी अत्यधिक पाटित कीमतों पर हुए हैं।
- x. वर्ष 2004-05 तक उत्पादन, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, लाभ, निवेश पर आय, नकद लाभ में वृद्धि हुई थी और वर्ष 2005-06 में इनमें गिरावट आ गई। बंधपि वर्ष 2006-07 में इनमें पुनः कुछ सुधार हुआ है तथापि, प्राप्त स्तर आधार वर्ष से भी कम रहा था।
- xi. यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध देशों और अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के सतत पाटन का सामना किया जा रहा है। तथापि, इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण या औचित्य नहीं है कि शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को होने वाली परिणामी क्षति के साथ बड़े पैमाने पर पाटन के जारी रहने या उसके बढ़ने की संभावना नहीं है।

xii. संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है जिससे आयातों के बाजार हिस्से में बढ़ोतरी हुई है ।

xiii. लाभप्रदता में उस समय गिरावट आई जब पाटित आयात कीमतों से कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री की स्थिति उत्पन्न हुई ।

**मै. थाई एक्रेलिक फाइबर कंपनी लि., थाइलैंड के विचार**

44. मै. थाई एक्रेलिक फाइबर कंपनी लि. ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के मुद्दे पर निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

i. निम्नलिखित पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के मात्रात्मक प्रभाव पर प्रतिकूल प्रभाव के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है :

क. आयात की मात्रा में समग्र रूप में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है ।

ख. उत्पादन की तुलना में आयात की मात्रा में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है ।

ग. खपत की तुलना में आयात की मात्रा में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है ।

ii. थाइलैंड से हुए आयातों द्वारा कीमत कटौती की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है ।

iii. आयातों से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर प्रभाव नहीं पड़ा है ।

iv. निम्नानुसार आयात एवं क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं बनता है यद्यपि घरेलू उद्योग ने इसका दावा किया है ।

क. वर्धमान को क्षति नहीं हुई है और आईएएल को हुई क्षति के कारण उसके आंतरिक हैं ।

ख. आईएएल तथा वर्धमान में वर्तमान घाटे और वैश्विक/भारतीय एक्रेलिक उद्योग को हुई वास्तविक समस्याओं के वास्तविक कारण यह हैं कि एक्रेलिक फाइबर के स्थान पर पॉलिएस्टर और सूत का उपयोग होने लगा है ।

ग. एक्रेलिक फाइबर उद्योग कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि और उसके उत्पादों की स्थिर मांग के बीच दबा हुआ था ।

घ. संबंधित निदेशक की रिपोर्टों में उल्लेख किए गए कारण भारतीय एक्रेलिक फाइबर उद्योग के निष्पादन से संबंधित हैं और न कि थाई एक्रेलिक फाइबर के आयातों से संबंधित ।



क. यद्यपि आईएल द्वारा विनिर्मित एकीलिक फाइबर ज़ाई स्पन फाइबर है जो डीजरी उपयोगों के लिए उपयुक्त नहीं है।

घ. आईपीसीएल और सीएफसीएल द्वारा आकार और प्रौद्योगिकी, दोनों के संबंध में अत्यंत अलमकारी क्षमताओं के कारण संयंत्र बंद किए गए थे।

छ. भारतीय घरेलू उत्पादकों द्वारा अपने उत्पादन की पर्याप्त मात्रा का निर्यात अन्य देशों को किया जाता है उन्होंने अपने निर्यात बिक्री में भारी घाटा उठाया है।

### अन्य प्रमुख पार्टियों के विचार

#### इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन

45. इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन ने अपने अनुरोधों में यह तर्क दिया है

- i. एकीलिक फाइबर के उपयोगता लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के कारण एकीलिक फाइबर की खरीद करते समय अब उच्च कच्ची सामग्री की लागत की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं।
- ii. भारत में एकीलिक वॉर्न स्पिनर्स द्वारा जापान एक्सलेन प्रौद्योगिकी के जरिए उत्पाद एकीलिक फाइबर को तरजीह दी जाती है जो शुष्क प्रक्रिया द्वारा उत्पादित एकीलिक फाइबर की बजाए उच्च गुणवत्ता का है और सीएफसीएल के बंद होने के बाद भारत में इसकी पर्याप्त क्षमता बन गई है।
- iii. टीएफ के कमतर पाटन मार्जिन के बावजूद पाटनरोधी शुल्क लागू रखा गया है।
- iv. वीएल द्वारा फाइबर के एक्सलेन प्रकार की मांग को पूरा नहीं किया जा सकता।
- v. फीड स्टॉक कीमत में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा एकीलिक फाइबर की कीमत में कुछ बढ़ोतरी की गई है।
- vi. विदेशी उत्पादकों द्वारा समान कीमतों पर विश्व के विभिन्न देशों को फाइबर का निर्यात किया जा रहा है।
- vii. यद्यपि, 10 से अधिक वर्षों से थार्डलैंड से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है तथापि, दो संयंत्र पहले से ही बंद हो गए हैं जिससे क्षति के अन्य कारण का पता चलता है।
- viii. एफएफएम के बहाने से लगभग सभी देशों के एकीलिक फाइबर विनिर्माताओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है। पूर्ववर्ती जांच में घरेलू उद्योग ने एकीलिक फाइबर के आयातों के लिए संचयी आधार पर क्षति का दावा किया था किंतु परिदृश्य बदल

गया है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी एकीलिक फाइबर की अनेक इकाइयों के बंद होने के कारण और आयातों में गिरावट के कारण लगभग नियंत्रण में आ गई है।

- ix. एकीलिक फाइबर विनिर्माताओं को पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव के तहत एकाधिकार प्राप्त है और पाटन की पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होती है जिससे कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने या ऐसी क्षति होने की संभावना प्रतीत होती हो।

**लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन एंड निटवियर क्लब (पंजीकृत)**

46. उन्होंने इस तर्क के आधार पर पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति की मांग की है कि :

- i. भारतीय उत्पादन वर्ष 2004-05 में हुए उत्पादन स्तर से पर्याप्त कम हो गया है और यह घरेलू मांग को पूरा करने के लिए काफी नहीं है।
- ii. भारत में यार्न स्पिनर अंतरनिहित क्षमता, धागे के बेहतर गुणवत्ता, बेहतर रंग और परिष्कृत परिधान में उपयुक्तता के कारण जापान एक्सलॉन प्रौद्योगिकी के जरिए उत्पादित ए एफ को तरजीह देते हैं। इस समय केवल वर्धमान एकीलिक लि. द्वारा इस प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है और उनके द्वारा अपने उत्पादन का अधिकांश भाग कैप्टिव रूप से उपयोग किया जाता है और इस प्रकार उपयुक्तता उद्योग आयातों पर निर्भर रहने के लिए बाध्य हो जाता है।
- iii. विद्याराधीन उत्पाद की उच्च कीमतों के परिणामस्वरूप पॉलिएस्टर के स्थान पर अन्य फाइबरों के उपयोग की शुरुआत हुई है।
- iv. मांग की मात्रा आपूर्ति से अधिक है, इसलिए घरेलू उत्पादक सर्वोत्तम कीमतों पर बिक्री करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- v. जो घरेलू उत्पादक पाटनरोधी शुल्क के रूप में संरक्षण प्राप्त करते हैं वे अपने उत्पाद का निर्यात विश्व भर में उन्हीं कीमतों पर करते हैं जिन कीमतों पर भारतीय उत्पादों पर ऐसे आयातक देशों द्वारा लगाए जा रहे पाटनरोधी शुल्क के बिना भारत में आयात होते हैं।
- vi. यह शुल्क 10 से अधिक वर्षों से लागू है और इसके बावजूद सीएफसीएल और आईईसीएल जैसे प्रमुख उत्पादकों ने अपना प्रचालन बंद कर दिया है जिससे भारतीय उत्पादकों की अप्रतिस्पर्धात्मकता का पता चलता है।
- vii. यद्यपि, उत्पादकों द्वारा समय-समय पर विद्याराधीन उत्पाद का आयात किया जा रहा है।

- viii. वर्तमान पाटनरोधी शुल्क पिछली सध्यावधि समीक्षा में निर्धारित 2.53% के पाटन मार्जिन की तुलना में 12% के आस-पास पाटन मार्जिन पर लागू किया जा रहा है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

47. प्राधिकारी ने विभिन्न पार्टियों द्वारा अपने अनुरोधों में उठाए गए विभिन्न तथ्यों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के जारी रहने के मुद्दे पर विचार किया है और उनकी जांच प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत इन तर्कों के आलोक में की गई है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है अतः प्राधिकारी इस बात की जांच करने से पूर्व कि क्या संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण पाटन और क्षति होने की संभावना है, घरेलू उद्योग को हुई वर्तमान क्षति, यदि कोई हो, की जांच करने की प्रक्रिया शुरू करते हैं।

### संघयी निर्धारण

48. पाटनरोधी नियमबली के अनुबंध II (iii) में यह प्रावधान है कि यदि एक से अधिक देशों से हुए किसी उत्पाद के आयातों के बारे में एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही हो तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उस स्थिति में ऐसे आयातों का संघयी निर्धारण करेंगे यदि वह यह निर्धारित करें कि:

क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन/निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों के 3% से अधिक है और जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है, वहां आयातों का संघयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक बनता है, और;

ख. आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संघयी निर्धारण उचित है।

49. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि थाईलैंड और कोरिया गणराज्य से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संघयी निर्धारण करना निम्नानुसार उचित होगा:-

- i. प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है;
- ii. प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है;
- iii. निम्नलिखित कारकों को ध्यान में रखते हुए संघयी निर्धारण अस्वीकार्य है।

क. शामिल वस्तु समान वस्तु है और वह एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रही है;

ख. आयातित उत्पाद की बिक्री वितरण के एक समान माध्यम के जरिए और ग्राहकों की बुलनीय श्रेणी को की जा रही है;

ग. दोनों देशों के उत्पादों द्वारा बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती की जा रही है।

घ. दोनों देशों से आयातों में वृद्धि हो रही है।

### वर्तमान क्षति एवं कारणात्मक संबंध

50. अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तत्परक जांच का प्रावधान है। जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातों में समग्र रूप में या आयातक देश में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक पाटित आयातों के कीमत प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

51. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ पदाधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से संबद्ध देशों से पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभावों तथा कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की संवयी जांच की है ताकि क्षति की मौजूदगी एवं पाटन एवं क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंधी की जांच की जा सके। :

### पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

52. प्राधिकारी द्वारा संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा और अन्य देशों से आयातों के प्रभाव की जांच निम्नानुसार की गई है:

### आयात की मात्रा और संबद्ध देशों का हिस्सा :

53. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों से आयातों के पूर्ण आंकड़ों का पता नहीं चलता है और आयात की मात्रा डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में सूचित मात्रा से अधिक है। चूंकि प्राधिकारी द्वारा एमटीआर-II के अंतिम जांच परिणामों में दर्शायी गई आयात की मात्रा का पहले ही सत्यापन किया जा चुका था, इसलिए प्राधिकारी वर्ष 2003-04, 2004-05 तथा 2005-06 और जांच अवधि के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ा स्रोत के अनुसार इसे मानने का प्रस्ताव करते हैं। जहां तक जांच अवधि का संबंध है, प्राधिकारी ने आई विनिर्माताओं द्वारा विश्व भर में निर्यातित मात्रा की तुलना में भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु की मात्रा के बीच तुलना करने के लिए वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों का अवलोकन किया और यह पाया कि डब्ल्यू टी ए के अनुसार आई एकेलिक द्वारा अपने उत्तर में ही दर्शाए गए 4389 मी.ट. की तुलना में थाइलैंड से भारत को एकेलिक फाइबर का कुल निर्यात 1857 मी.ट. का हुआ था

वित्तका सत्यापन बाद में प्राधिकारी द्वारा किया गया था। इसके विपरीत डीजीसीआईएडएस के आंकड़ा स्रोत से थाइलैंड से आयातों की समग्र मात्रा 2697 मी.ट. होने का पता चलता है। इसके अलावा डब्ल्यू टी ए के अनुसार थाइलैंड ने कैलेंडर वर्ष 2007 के दौरान विश्व भर में 50537 मी.ट. संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जबकि इसी अवधि के दौरान डब्ल्यूटीए के अनुसार भारत को 2730 मी.ट. का निर्यात किया गया था। अतः डीजीसीआईएडएस और डब्ल्यूटीए के आंकड़ा स्रोत पर मात्रात्मक विश्लेषण हेतु विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि उन्होंने अपूर्ण आंकड़े प्रदर्शित किए हैं। अतः प्राधिकारी मात्रात्मक विश्लेषण के प्रयोजनार्थ जांच अवधि के लिए थाइलैंड के सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदर्शित मात्रा को स्वीकार करने का प्रस्ताव करते हैं। तदनुसार क्षति अवधि के लिए आयात मात्रा निम्नानुसार रही थी :

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
1	संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	3385	5187	3,985	4,884
2	कोरिया जन.गण.	मी.ट.	819	1,739	662	495
3	थाइलैंड	मी.ट.	2,566	3,448	3,323	4,389
4	शुल्क अधिरोपित अन्य देश	मी.ट.	9642	8218	3597	1745
5	अन्य देश	मी.ट.	791	1207	4615	5507
6	कुल आयात	मी.ट.	18,818	14,672	12,197	12136

54. संबद्ध देशों से जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में आयातों में लगभग 44% की वृद्धि पाई गई है। जहां तक थाइलैंड का संबंध है, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान यह वृद्धि 71% रही है और कोरिया के मामले में 40% की गिरावट आई है। शुल्क अधिरोपित अन्य देशों से आयातों की मात्रा में आधार वर्ष की मात्रा की तुलना में लगभग 82% गिरावट आई है। तथापि, जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया गया है, उन देशों से आयातों की मात्रा में लगभग 596% की भारी वृद्धि हुई है। इस श्रेणी में शामिल देश मिश्र, ईरान, डीपीआर कोरिया, लातीविया, रूस, उजबेकिस्तान, मेक्सिको, ब्राजील और यूरोपीय संघ हैं।

55. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात की मात्रा काफी अधिक रही थी।

#### मांग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

#### मांग एवं बाजार हिस्सा

56. सत्यापित आंकड़ों के आधार पर मांग एवं बाजार हिस्से के बारे में स्थिति निम्नानुसार है :

	यूओएम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
कुल आयात	मी.ट.	13818	14672	12197	12136
संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	3385	5187	3,985	4,884
शुल्क अधिरोपित अन्य देशों से आयात	मी.ट.	9642	8218	3597	1745

पाटनरोधी शुल्क अनधिरूपित अन्य देशों से आयात	मी.ट.	791	1207	4615	5507
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	66114	65504	68249	75197
अन्य घरेलू उत्पादक	मी.ट.	27500	31760	27138	1300
घरेलू मांग	मी.ट.	107432	111935	107585	88633
मांग में हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	61.54	58.52	63.44	84.84
अन्य घरेलू उत्पादक	%	25.60	28.37	25.23	1.46
संबद्ध देश	%	2.06	3.56	2.10	5.51
शुल्क अधिरूपित अन्य देश	%	8.98	7.34	3.34	1.96%
अन्य देश	%	1.83	2.21	5.89	6.21%

57. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू मांग में लगभग 18% की गिरावट आई है। तथापि, संबद्ध देशों और पाटनरोधी शुल्क अनधिरूपित अन्य देशों से आयातों की मात्रा में वर्तमान अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि पाटनरोधी शुल्क अधिरूपित अन्य देशों की आयात मात्रा में गिरावट आई है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद क्षति अवधि के दौरान संबंधित देशों से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि अन्य घरेलू उत्पादकों के वजूद पर हुई थी, जिन्होंने या तो अपना उत्पादन कम कर दिया है या वे पाटन एवं परिणामी क्षति के संभावित कारण की वजह से समग्रतः घरेलू उद्योग से अलग हो गए हैं। प्राधिकारी आगे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भारतीय उत्पादकों के समग्र बाजार हिस्से में गिरावट आई है भले ही यह गिरावट मामूली रही है।

#### घरेलू उद्योग का उत्पादन

58. निम्नलिखित तालिका में क्षति अवधि से लेकर जांच अवधि तक के दौरान घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता और उत्पादन का विहंगावलोकन दिया गया है :

	यूओएम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
स्थापित क्षमता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	110	116
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	96	107
क्षमता उपयोग	%	101.06	99.69	88.68	93.19
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	88	92

59. उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग की क्षमता में लगभग 16% और उत्पादन में 7% की वृद्धि हुई है। आधार वर्ष 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में लगभग 7% की वृद्धि हुई है जो इसी अवधि के दौरान समग्र क्षमता में हुई वृद्धि की तुलना में लगभग 9% कम है। यद्यपि, घरेलू उद्योग की क्षमता और उत्पादन में वृद्धि हुई, तथापि उत्पादन में वृद्धि क्षमता में हुई वृद्धि से कम रही है।

परिणामतः यह अर्थ निकाला जा सकता है कि क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। यद्यपि वर्ष 2006-07 में क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई, तथापि वह वर्ष 2004-05 के दौरान प्राप्त स्तर से कम रही थी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि उत्पाद की उपयोगिता एसोसिएशन ने देश में अपर्याप्त क्षमताओं के बारे में शिकायत की है। तथापि, सत्यापित आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा और अधिक उत्पादन और बिक्री की जा सकती थी, यद्यपि, घरेलू उद्योग की मांग और उत्पादन के बीच मामूली/समयांतिक अंतर प्रतीत होता है।

### घरेलू उद्योग की बिक्री

60. निम्नलिखित तालिका में दी गई सूचना का घरेलू उद्योग के स्थापन के दौरान स्थापन किया गया था।

विवरण	सूचक	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
आरंभिक स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	34	95	110
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	96	107
घरेलू बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	103	108
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	42	75
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	282	328	398

61. प्राधिकारी ने घरेलू एवं निर्यात बिक्री की अलग से जांच की है। उपर्युक्त आंकड़ों के अनुसार प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू बिक्री में 8% की वृद्धि हुई है। यद्यपि, तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष 2005-06 की तुलना में इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में गिरावट आई है, तथापि जांच अवधि के दौरान निर्यात बिक्री में 90% से अधिक की बिक्री हुई है।

### घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

62. प्राधिकारी द्वारा कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निर्यात बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से हुए आयातों की पूर्ण लागत के साथ की गई है।

### कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

63. कीमत कटौती का निर्धारण समूची जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के भारत औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करके किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार और संबद्ध देश से आयात कीमत के डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों में सूचित मात्रा पर लागू मूल सीमाशुल्क को जोड़कर की गई है।

64. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित रिबेट, छूट और कमीशन एवं उसके द्वारा प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की छूट प्रदान की गई है।

65. कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ थाइलैंड से सहयोगी निर्यातक हेतु चीन जन.गण. के लिए सहयोगी निर्यातक की औसत सीआईएफ के आधार पर निर्धारित भारत औसत पहुंच कीमत तथा चीन को हुए निर्यातों की न्यूनतम सीआईएफ कीमत और कोरिया गणराज्य से भारत को हुए निर्यातों की डीजीसीआईएंडएस की कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति रहित बिक्री कीमत तथा क्षति अवधि के लिए उत्पादित लागत के साथ की गई है।

मूल्य रु./मी.ट. में

विवरण	यूओएम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
बिक्री कीमत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
पहुंच मूल्य (कोरिया)	रु./मी.ट.	***	***	***	***
पहुंच मूल्य (सहयोगी थाइलैंड)	रु./मी.ट.				***
पहुंच मूल्य (असहयोगी थाइलैंड)	रु./मी.ट.				***
कीमत कटौती (कोरिया)	रु./मी.ट.				-(***)
कीमत कटौती (सहयोगी थाइलैंड)	रु./मी.ट.				***
कीमत कटौती (असहयोगी थाइलैंड)					***
कीमत कटौती (कोरिया)	%				-(1-4%0
कीमत कटौती (सहयोगी थाइलैंड)	%				1-4%
कीमत कटौती (असहयोगी थाइलैंड)					10-15%
क्षतिरहित कीमत	रु./मी.ट.				***
कम कीमत पर बिक्री (कोरिया)	रु./मी.ट.				***
कम कीमत पर बिक्री (सहयोगी थाइलैंड)	रु./मी.ट.				***
कम कीमत पर बिक्री (असहयोगी थाइलैंड)					***
कम कीमत पर बिक्री (कोरिया)	%				3-8%
कम कीमत पर बिक्री (सहयोगी थाइलैंड)	%				4-9%
कम कीमत पर बिक्री (असहयोगी थाइलैंड)	%				15-20%



66. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयातों की पहुंच कीमत के कारण अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हुई है, जबकि कोरिया गणराज्य के मामले में कोई कटौती नहीं देखी गई है।

#### पाटित आयातों का कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव:

67. पाटित आयातों के कीमत हासकारी प्रभाव की जांच भी संबद्ध देशों के उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और पहुंच मूल्य के संदर्भ में की गई है। उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि उत्पादन लागत में इस वृद्धि के अनुरूप संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य में वृद्धि नहीं हुई है।

#### क्षति के अन्य मापदंडों की जांच

68. जिन अन्य आर्थिक मापदंडों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है, उनकी प्राधिकारी द्वारा जांच निम्नानुसार की गई है:

#### उत्पादकता

69. घरेलू उद्योग की उत्पादकता का आंकलन उत्पादन की श्रमिकों पर उत्पादकता के संबंध में लगाया गया है और प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उत्पादन में वृद्धि के अनुरूप उत्पादकता में सुधार हुआ है।

विवरण	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादकता	***	***	***	***

#### लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय और नकद प्रवाह

70. सत्यापित सूचना से निम्नानुसार पता चलता है :

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
बिक्री की लागत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	125	138
बिक्री कीमत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	111	132
लाभ/हानि	रु./मी.टन	***	***	(***)	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	303	-133	24
घरेलू बिक्री पर कुल लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	(***)	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	300	-137	25
मूल्यहास	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	102	102
नकद लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	(***)	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	184	-0.36	69

71. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्ष 2004-05 तक लाभ और हानि के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में पर्याप्त सुधार प्रदर्शित होता है जबकि वर्ष 2005-06 में घरेलू उद्योग को भारी घाटा हुआ है। प्राधिकारी आगे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान अपनी लाभप्रदता को सुधारने में सक्षम था, तथापि पर्याप्त लाभों का स्तर काफी कम रहा था। प्राप्त स्तर मुख्यतः आधार वर्ष की तुलना में इसलिए कम रहा था क्योंकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बढ़ोत्तरी नहीं हुई थी।

72. नकद लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय से लाभ जैसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

#### रोजगार एवं मजदूरी

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	105	107
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	113	119
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	107	110

73. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि रोजगार के स्तर और मजदूरी से घरेलू उद्योग की स्थिति में किसी प्रकार की विकृति का पता नहीं चलता है।

#### निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

विवरण	यूओएम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07(जांच अवधि)
लगाई गई पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	106	117
लाभ	लाख रुपए	***	***	(***)	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	300	-137	25
व्याज	लाख रुपए	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	71	66	62
पीपीआईटी	लाख रूपए	***	***	(***)	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	153	-7	49
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	(***)	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	146	-6	42

74. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में वृद्धि की है और तत्काल पूर्ववर्ती अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय में भारी सुधार हुआ है और अब यह आधार अवधि 2003-04 तथा 2004-05 के आसपास है।

#### कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

75. हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान कताई उद्योग स्तर पर आंतरिक फाइबर प्रतिस्पर्धा और भारत में एक्रिलिक फाइबर की कम मांग, निर्यात निष्पादन में गिरावट जैसे अन्य कारकों से घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित और विक्रीत संबद्ध वस्तु की कीमत पर प्रभाव पड़ा है। प्राधिकारी ने लागत संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हो, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा तथा प्रतिस्पर्धी स्थानापन्न की कीमत की जांच की है ताकि पाटित आयातों से भिन्न कारकों का विश्लेषण किया जा सके जिनसे घरेलू बाजार में कीमतों में प्रभाव पड़ सकता है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि एक्रिलिक फाइबर ऊन का एक लाभकारी स्थानापन्न है और उसका परिवहन, घरेलू एवं औद्योगिक क्षेत्रों में विविध प्रकार का उपयोग होता है और वह स्थानापन्न उत्पाद की कीमत अर्थात् ऊन की कीमत ज्यादा रहती है, के कारण इतना ही महंगा रहता है। प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि संबद्ध वस्तु के भागीदार उत्पादकों का हिस्सा कुल घरेलू मांग का लगभग 85% है। प्राधिकारी आगे यह मानते हैं कि संबद्ध वस्तु के दो अन्य उत्पादकों ने यद्यपि, जांच अवधि के बाद अपना उत्पादन बंद कर दिया है।

#### मालसूची

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
मालसूची - अवधि की समाप्ति पर	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	282	328	388
उत्पादन के % के रूप में मालसूची	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	261	341	372

76. घरेलू उद्योग की मालसूची के स्तर से क्षति अवधि के दौरान सतत वृद्धि का पता चलता है। तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि ऐसा आंशिक रूप से क्षमता में वृद्धि और उच्चतर उत्पादन स्तर के कारण हो सकता है।

### क्षति का समग्र निर्धारण

77. प्राधिकारी द्वारा की गई उपर्युक्त जांच से यह पता चलता है कि यद्यपि क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री जैसे वास्तविक मापदंडों के संबंध में, घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है, तथापि जांच अवधि में घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति में मामूली सुधार हुआ है।

### अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

78. पूर्व में किए गए रिकॉर्ड के अनुसार निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पार्टी ने जांच की कार्यवाही के दौरान अपने लिखित अनुरोधों में अनेक तर्क दिए हैं जिनमें अनिवार्यतः यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग के समग्र निष्पादन में सुधार हुआ है और क्षति, यदि कोई है, पाटित आयातों से भिन्न कारकों के कारण हुई है। प्राधिकारी द्वारा अनिवार्य कारकों और घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले अन्य कारकों के संदर्भ में हितबद्ध पार्टियों के तर्कों की निम्नानुसार जांच की गई है:

### अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

79. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से भिन्न अनेक देशों से आयात हुए हैं जिनमें वे देश भी शामिल हैं, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित देशों से हुए आयातों में पर्याप्त गिरावट आई है। शुल्क अनधिरोपित देशों से हुए आयातों में वृद्धि हुई है। तथापि, इस वस्तु का आयात अनेक देशों से किया गया है और अलग-अलग देशों से हुए आयात अल्प मात्रा में और एक समान कीमत स्तर पर हुए हैं।

### मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

80. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में लगभग 18% की गिरावट प्रदर्शित होती है। हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि मांग में यह कमी एक्रेलिक फाइबर के स्थान पर पॉलिएस्टर फाइबर और सूत का उपयोग किए जाने के कारण आई है। तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि मांग में यह कमी से यह पता नहीं चलता है कि उससे इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए वास्तविक मापदंडों में घरेलू उद्योग प्रभावित हुआ है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री एवं संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।

### विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

81. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार प्रचलित नहीं है। भागीदार घरेलू उद्योग का देश में क्षमता का एक बड़ा हिस्सा बनता है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यद्यपि, विभिन्न अन्य स्रोतों से आयातों के अधिकांश अनुपातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है, तथापि इन स्रोतों से हुए आयातों के पहुंच मूल्य

पर असंदेह पाटनरोधी शुल्क काफी कम है जिससे घरेलू उद्योग के लिए विभिन्न क्षेत्रों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा का पता चलता है।

### प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात निषेधन

82. हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की प्रौद्योगिकी और संयंत्र पुराने तथा अप्रचलित हैं। प्राधिकारी यह मानते हैं कि विश्व भर में एकेलिक फाइबर का विनिर्माण या तो शुष्क प्रौद्योगिकी के जरिए या नम प्रौद्योगिकी के जरिए किया जाता है। देश के 5 उत्पादकों में से दो उत्पादकों द्वारा शुष्क प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है और 3 उत्पादन इस उत्पाद के उत्पादन हेतु नम प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। प्रौद्योगिकी मानक और प्रचालन लागत के संबंध में कोई खास अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग के अनुसार दोनों ही प्रौद्योगिकियाँ देश में एकेलिक फाइबर के पाटन के समय से भी काफी पहले से सह अस्तित्व में हैं। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि आईएएल ने हाल के वर्षों में प्रौद्योगिकी सहायता के संबंध में अन्य देशों में अत्यधिक कार्य किया है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि नए संयंत्रों द्वारा भी शुष्क स्वन प्रौद्योगिकी पर विचार किया जा रहा है। यह तर्क दिया गया है कि आईएएल द्वारा विभिन्न पुरस्कारों/मान्यताओं की प्राप्ति से आईएएल के पास मजबूत प्रौद्योगिकी संवर्धन का पता चलता है। अन्य प्रमुख घरेलू उत्पादक पीएएल उत्पादन मात्रा और प्रौद्योगिकी के अनुसार काफी मजबूत हैं। किसी भी निर्यातक या शुल्क का विरोध करने वाले अन्य आयातक ने इस दस्तावेजी साक्ष्य के प्रतिकूल तर्क नहीं दिया है। इसके अलावा प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "प्रौद्योगिकी विकास" "प्रौद्योगिकी में अंतर" से भिन्न है। नियमों में "प्रौद्योगिकी विकास" पर विचार करने का प्रावधान है। अतः प्रौद्योगिकी अंतर घरेलू उद्योग के निषेधन को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है।

83. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों में आधार वर्ष से भारी गिरावट आई है। यद्यपि वर्ष 2005-06 की तुलना में जांच अवधि के दौरान निर्यात बिक्री में भारी वृद्धि हुई है।

विवरण	यूओएम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
निर्यात बिक्री		***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	42	75

84. हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात कम कीमत पर किए गए हैं जिससे उसे क्षति हो सकती है। तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि निर्यातों की मात्रा उनकी कुल बिक्री के 9% से कम है और बिक्री अंतर भी काफी अधिक नहीं है जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती हो। इसके अलावा, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन केवल उनके घरेलू निषेधन के आधार पर किया गया है और उनके निर्यात निषेधन के कारण क्षति, यदि कोई हो, का हेतु पाटित आयातों को नहीं माना गया है।

### घरेलू उद्योग की उत्पादकता

85. श्रमिक उत्पादन और दैनिक उत्पादक के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित हुआ है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि उत्पादकता एक ऐसा कारण नहीं है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का हेतु माना जा सके। वस्तुतः घरेलू उद्योग ने उत्पादकता में सुधार के जरिए अपने घरेलू प्रचालन में हुए घाटे को कम करने का प्रयास किया है।

### क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

86. घरेलू उद्योग के लागत आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित संबद्ध वस्तु की क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देशों से हुए आयातों के पहुंच मूल्यों के साथ की गई है जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है :

क्षति मार्जिन	यूओएम	थाई एक्रिलिक	थाइलैंड के अन्य निर्यातक	कोरिया जन.गण.
सीआईएफ कीमत	रु./मी.टन	***	***	***
पहुंच मूल्य	रु./मी.टन	***	***	***
एनआईपी	रु./मी.टन	***	***	***
क्षति मार्जिन	रु./मी.टन	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डॉ./मी.टन	***	***	***
क्षति मार्जिन	%	5.02	17.25	4.13

### क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

#### घरेलू उद्योग के अनुरोध

87. पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के अपने दावे के समर्थन में घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- (क) निर्यात पाटित कीमतों पर हो रहे हैं।  
 (ख) क्षति अवधि के दौरान निर्यात की मात्रा में वृद्धि हुई है।  
 (ग) पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में निम्नलिखित कारणों से वृद्धि होने की संभावना है :

- थाइलैंड से विश्व के देशों को हुए निर्यातों की मात्रा में वर्ष 2006 तक वृद्धि हुई परंतु चीन के बाजारों को होने वाले उनके निर्यातों में गिरावट के कारण वर्ष 2007 में कमी आई।
- चीन ने एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन की क्षमता में वृद्धि की है। परिणामतः टीएएफ को चीन के लिए निर्यात की मात्रा में गिरावट का सामना करना पड़ रहा है और यह अब वैश्विक बाजारों की तलाश कर रहा है।

- iii) चीन के लिए टीएफ की निर्यात कीमत भारत, घरेलू एवं अन्य तीसरे देशों की तुलना में कम है अतः टीएफ चीन को होने वाली बिक्रियों को भारतीय बाजार में करने के लिए सर्वाधिक इच्छुक होगा।

### थाई एंथ्रीलिक द्वारा किए गए अनुरोध

88. टीएफ ने अपने इस दावे के समर्थन में कि पाटनरोधी शुल्क की सन्धति की स्थिति में पाटन एवं क्षति होने की संभावना नहीं है, निम्नलिखित तर्क दिए हैं :

- i. मूल जांच की जांच अवधि: अर्थात् अप्रैल, 1995 से सितंबर, 1995 तक के दौरान मूल जांच के प्रारंभिक जांच परिणामों में किए गए उल्लेख के अनुसार थाइलैंड से 5498 मी.ट. के आयात हुए थे। यह आयात इस उपाय को लागू करने से पूर्व हुए थे। वर्ष 1997 में यह उपाय लागू किए जाने के बाद वर्ष 1998-99 के दौरान थाइलैंड से हुए आयातों में वृद्धि हुई और वह 7228 मी.ट. के उच्चतम स्तर तक पहुंच गए। अगले 5 वर्षों अर्थात् वर्ष 1999-00 से 2003-04 तक के दौरान थाइलैंड से आयात की मात्रा 2000 मी.ट. के आसपास रही। अगले तीन वर्षों अर्थात् 2004-05 से 2006-07 के दौरान थाइलैंड से आयात की मात्रा केवल लगभग 3000 मी.ट. रही। जांच अवधि के दौरान इसकी मात्रा बढ़कर 4389 मी.ट. हो गई जो शुल्क अधिरोपण के बाद वर्ष 1998-99 में प्राप्त स्तर से कम रही थी। संबद्ध देशों से आयातों का बाजार हिस्सा इस समीक्षा के लिए क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान लगभग 3%-4% पर स्थिर बना रहा है। थाइलैंड में थाई एंथ्रीलिक फाइबर कं. लि. की क्षमता 82,000 मी.ट. से बढ़कर 97,000 मी.ट. हो गई है और वह समूची क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान पूरी क्षमता पर कार्य कर रही है। निर्यातक ने यह बताया है कि अतिरिक्त क्षमता को बढ़ाने की कोई योजना नहीं है। थाइलैंड के निर्यातक के पास एक मजबूत निर्यात अभिमुखीकरण है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :-

	2005	2006	पीओआर
कुल बिक्री	***	***	***
घरेलू बाजार	***	***	***
भारत को निर्यात	***	***	***
अन्य देशों को निर्यात	***	***	***
फिजूल बिक्री	***	***	***
घरेलू बाजार	4%	3%	20%
भारत को निर्यात	33%	22%	4%
अन्य देशों को निर्यात	61%	72%	72%
फिजूल बिक्री	2%	3%	3%

- ii. यह तर्क दिया गया है कि क्षमता के संवर्धन से पूर्व निर्यातों का हिस्सा उनकी कुल बिक्री का 61% था। क्षमता संवर्धन के बाद वर्ष 2006 में यह बढ़कर 72% हो गया। समीक्षा अवधि के दौरान यह उसी स्तर पर बना रहा। यह देखा गया था

कि अन्य देशों से हुए निर्यात निर्यातक के लिए हमेशा महत्वपूर्ण रहे हैं और ये प्रमुख श्रष्ट क्षेत्र बने रहेंगे । वर्ष 2005 में भारत को हुए निर्यातों का हिस्सा उनकी कुल बिक्री का 33% रहा था । यह वर्ष 2006 के दौरान घटकर 22% हो गया और समीक्षा अवधि में आगे और घटकर 4% रहा गया जिससे यह पता चलता है कि कंपनी भारत को होने वाले निर्यातों पर ध्यान नहीं दे रही है । इसके अलावा भारत को होने वाली बिक्री के अपने बाजार हिस्से में आई गिरावट की क्षतिपूर्ति थाइलैंड के भीतर घरेलू बिक्री को बढ़ाकर की गई थी । थाइलैंड में घरेलू बिक्री का हिस्सा वर्ष 2005 के दौरान केवल 4% और वर्ष 2006 के दौरान 3% रहा था । परंतु जांच अवधि के दौरान यह बढ़कर उनकी कुल बिक्री का 20% हो गया ।

- iii. भारत के लिए औसत बिक्री कीमत वर्ष 2005, 2006 और समीक्षा अवधि के दौरान क्रमशः \*\*\* बहत प्रति मी.ट., \*\*\* बहत प्रति मी.ट. और \*\*\* बहत प्रति मी.ट. रही थी जैसा कि निम्नलिखित तालिका से पता चलता है :

	2005	2006	पीओआर
घरेलू बाजार	***	***	***
घरेलू बाजार (सूचीबद्ध)	100	102	104
भारत को निर्यात	***	***	***
भारत को निर्यात (सूचीबद्ध)	100	103	100
अन्य देशों को निर्यात	***	***	***
अन्य देशों को निर्यात (सूचीबद्ध)	100	103	104
भारत और अन्य देशों के लिए अलग-अलग निर्यात कीमत	5%	5%	1%
घरेलू बिक्री कीमत और भारत के लिए निर्यात कीमत के बीच अंतर	-1%	-2%	2%

- iv. भारत में घरेलू बिक्री कीमत निर्यातों की पहुंच मूल्य से कम थी और कीमत कटौती समूची क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान ऋणात्मक रही थी ।
- v. आगे यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने उत्पादन, बिक्री, बिक्री कीमत और लाभ के संबंध में पर्याप्त सकारात्मक सुधार किया है । संबद्ध देशों से हुए आयातों द्वारा कीमत में कोई कटौती नहीं हुई थी । विभिन्न क्षति मापदंडों के तहत घरेलू उद्योग का निष्पादन सकारात्मक और उत्साहवर्धक रहा है । पूंजी अथवा निवेश जुटाने की उनकी क्षमता सकारात्मक रही है क्योंकि उन्होंने समीक्षा अवधि के दौरान अपनी क्षमता 85,000 मी.ट. से बढ़ाकर 90,000 मी.ट. कर ली है ।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

89 टीएफ द्वारा उपलब्ध सूचना और उनक परिसर पर की गई मौके पर जांच के आधार पर उनके संबंध में घाटन मार्जिन से संबंधित खंड में विस्तार से जांच की गई है । प्राधिकारी ने क्षति निर्धारण की संभावना हेतु उसी सूचना पर ही विश्वास किया है ।



अंतिम जांच परिणाम:

90. हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों, उपलब्ध कराई गई सूचना और किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पार्टियों के अनुरोधों के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों अथवा उपर्युक्त जांच परिणामों में अन्यथा रिकॉर्ड किए गए और वर्तमान स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण एवं पाटन एवं क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- i) भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही है और थाइलैंड और कोरिया गणराज्य से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से काफी अधिक है ।
- ii) संबद्ध वस्तु के भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश करने की संभावना है और थाइलैंड एवं कोरिया गणराज्य से हुए आयातों के संबंध में संभावित पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक रहने की संभावना है ।
- iii) यदि, वर्तमान उपाय समाप्त कर दिया जाता है तो भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु के पाटित कीमत पर प्रवेश करने की संभावना है ।
- iv) यद्यपि, घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान अपने निष्पादन में सुधार किया है, तथापि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को पर्याप्त क्षति ही रही है । इसके अलावा, यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने और उसके गंभीर होने की संभावना है ।

91. इस आशय का निष्कर्ष निकालने के बाद कि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में थाइलैंड एवं कोरिया गणराज्य से हुए आयातों के कारण पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, प्राधिकारी की यह राय है कि इन देशों से आयातों के संबंध में इस उपाय को लागू किए जाने की जरूरत है ।

92. हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रकटन विवरण पर टिप्पणियों के रूप में किए गए अनुरोधों सहित किए गए समस्त अनुरोधों की जांच करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जहां तक दोनों संबद्ध देशों का संबंध है, लागू पाटनरोधी शुल्क को संशोधित करने की जरूरत नहीं है । अतः प्राधिकारी दिनांक 06.08.2002 की अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 26/1/2001-डीजीएडी द्वारा अधिसूचित और बाद में 9.10.2002 की सीमा शुल्क अधिसूचना सं. 106/2002 के तहत केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित दरों पर थाइलैंड और कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखना आवश्यक समझते हैं और उसकी सिफारिश करते हैं ।

93. इस सिफारिश के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार के आदेशों के खिलाफ उत्पन्न होने वाली कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

## NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd October, 2008

Final Findings

(Sun Set Review)

No. 10/7/2006-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

**BACKGROUND OF THE CASE**

2. On the basis of an application filed by the domestic producer in India, the Designated Authority (herein after referred to as the Authority) initiated an antidumping investigation on 13.9.1996 and notified its final findings recommending definitive antidumping duty on import of Acrylic Fibre (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from Thailand, USA and Korea RP, vide Notification No. 47/ADD/IW, dated 14.10.1997. Subsequently mid-term review was undertaken vide Notification No. 21/1/99-DGAD, dated 26.4.1999 and definitive anti dumping duty was recommended vide final findings Notification No. 21/1/99-DGAD, dated 19.4.2000. Sunset review of the anti dumping duty was initiated vide Notification No. 26/1/2001-DGAD, dated 07.8.2001 and the final findings were issued vide Notification No. 26/1/2001-DGAD, dated 06.8.2002. Definitive antidumping duty was re-imposed on the subject goods vide Customs Notification No. 106/2002-Customs, dated 09.10.2002. Authority initiated mid term review on 06.07.2006 and definitive anti-dumping was recommended vide final finding Notification No. 15/13/2006 dated 03.10.2007.

3. Forum of Acrylic Fibres Manufacturers, New Delhi through the participating companies, viz., M/s. Indian Acrylics Ltd and M/s. Vardhman Acrylics Ltd., filed a petition under Section 9A(5) of the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 read with Rule 23 of the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 requesting sunset review of anti dumping duties earlier imposed on imports of Acrylic Fibre from Thailand, Korea and USA. In its application, the applicant substantiated the need for a review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Thailand and Korea RP. The petitioner claimed with prima facie evidence that cessation of anti dumping duty imposed on subject goods from these countries is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury and have requested for continuation and enhancement of the anti dumping duty imposed on subject goods from subject countries for a further period of five years.

4. Authority initiated sunset review vide notification No. 8<sup>th</sup> October 2007 in accordance with Section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of Antidumping Rules, to review the need for continued imposition of duties in force and whether the expiry of the duty would be likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

### **PROCEDURE**

5. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:

- i) After initiation of the review investigation, the Authority notified the domestic industry, all known exporters/producers in the subject countries and known importers, calling for questionnaire responses and necessary information in accordance with Rule 6(4);
- ii) The Embassy of the subject countries in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iii) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from Thailand and Korea RP.
- iv) Only one of the exporters from Thailand, M/s. Thai Acrylic Fibre, responded to the questionnaire in response to the above notification.
- iii) The period of investigation for the purpose of the present review is 1<sup>st</sup> April 2006 to 31<sup>st</sup> March 2007 (12 months). However, injury analysis covered the years 2003-2004, 2004-2005, 2005-2006 and April 2006-March 2007.
- iv) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;
- v) The following domestic producers of the subject goods have provided their cost and injury information for injury investigation.
  - a. M/s Indian Acrylic Ltd;
  - b. M/s Pasupati Acrylon;
  - c. M/s Vardhaman Acrylic
- vi) Following other interested parties filed their responses to the initiation notification:
  - a) Ludhiana Spinners Association;
  - b) Indian Spinners Association
- vii) The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.

- viii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- x) The Authority also verified the data of the cooperating exporter, to determine the normal value and dumping margin as per the Rules.
- xi) The Authority held a public hearing on 25<sup>th</sup> March 2008 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of domestic industry, exporter of the subject goods from Thailand and other interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered and incorporated in the findings to the extent they are relevant and substantiated with evidence.
- xii) \*\*\*\* In the statement represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

### **PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'**

6. The product involved in the original investigation and this sunset review is Acrylic Fibre. Acrylic Fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 90% by weight of Acrylonitrile, which is a major raw material for production of acrylic fibre. It is broadly described in terms of colour, length and denier of the fibre. It is used for the purpose of manufacturing apparels, household items and it has a great industrial use etc. It is classified under Chapter 55 of the Customs Tariff Act, 1975. It is further classified under the heading 550330 of schedule-I of Custom Tariff Act and 55033000 as per Indian Trade Classification. The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

### **Views of Interested Parties**

#### **Views of M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand**

7. It has been argued by TAF that product under consideration remained all along as Acrylic Fibre, i.e., acrylic staple fibre. Acrylic Tow Fibre and Acrylic Top Fibre are beyond the scope of the product under consideration on the basis of different customs classification and difference in selling price. Further, there is no warrant to amend the product in a review as the Authority in a most recent review held that Acrylic Top is beyond the scope of product under consideration. Domestic industry is seeking enhancement in the scope of product under consideration.

### **Views Of the Domestic Industry**

8. On the other hand domestic industry claimed that acrylic fibre implies Acrylic Staple Fibre, Acrylic Tow Fibre and Acrylic Top Fibre. Further, Acrylic Fibre does not mean Acrylic Staple Fibre alone. There is no warrant to amend the product in a review. This, however, applies to the previous as well as present review. There was no warrant to restrict the product in the previously concluded mid term investigations. Domestic industry requested the Authority to check the records of the previous investigations, claiming that acrylic top was wrongly excluded from the previous mid term review and in a wholly unwarranted manner without any requests / submissions by any party and without having regard to various issues involved therein. It is further claimed that Acrylic Fibre is processed further to obtain acrylic tops. The additional / incremental processing cost is hardly 3-5% of the total cost of production. Thus the same does not imply dislike product.

### **Examination by Authority**

9. Authority examined these contentions in details. The Authority holds that the present investigation is a sunset review investigation and therefore the scope of the product under consideration should not be altered in review investigation. The Authority further holds that the scope of the present product under consideration is the same as was the scope of the product under consideration in the sunset review investigations notified vide Notification No. 26/1/2001-DGAD dated 06.8.2002 and consequent Customs Notification No. 106/2002-Customs, dated 09.10.2002.

### **D. Standing and scope of the Domestic Industry**

10. Petition was filed by Forum of Acrylic Fibre Manufacturers based on information provided by Indian Acrylics Ltd. and Vardhman Acrylics Ltd. Subsequent to initiation, Pasupati Acrylon Ltd. filed its injury and costing information.

### **Views Of the Interested Parties Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand**

11. It has been argued that constituent of domestic industry have imported the subject goods during POI either directly or through their affiliated companies. It has been alleged that domestic industry had made a false declaration in their application for sunset review that neither themselves nor their related parties had imported the product concerned into India. However, Indian Acrylic Ltd itself had 1658 MT (335 MT during POI and 1323 MT post POI) of product concerned from Thai Acrylic Fibre Co Ltd. Similarly, two of the related entities of Vardhman Acrylic Ltd had imported 259 MT (52 MT during POI and 207 MT post-POI) from Thai Acrylic Fibre Co Ltd.

12. In addition, it has been alleged that Indian Acrylics Ltd had also imported 743 MT from Montefibre Spain during POI and 950 MT from Montefibre Spain and Formosa, Taiwan post POI. Thus, two domestic producers had imported significant quantities and they had made false declaration that they did not import the product concerned and therefore should not be considered as domestic industry. Rule 5 have not been followed by the Designated Authority while initiating the case.

### **Domestic industry**

13. Domestic industry on the other hand has submitted that Indian Acrylics and Vardhman Acrylics have imported the subject goods under advance license. Further, in case of IAL, the material was customs cleared after the investigation period. Rule 5 is not applicable in case of sunset review. The domestic industry has also pointed out the lack of any application proforma for sunset reviews, even when there is prescribed proforma for mid term review. The perusal of the same would reveal that the questions relating to import or export by companies is wholly irrelevant. It was further claimed that an application for sunset review need not be made by domestic industry. Any interested party can make an application. In fact, application can be on behalf of the domestic industry.

### **Examination by the Designated Authority**

14. The Authority on verification found that Indian Acrylics and Vardhman Acrylics have imported the subject goods under duty exemption scheme. There is no import by Indian Acrylics during the period of investigation and in any case, the imports are against an advance license in which case the imported inputs are not meant for domestic consumption but for export purposes. Authority notes that it is a consistent practice with the Authority not to take into account imports by domestic producers under Advance License for the determination of domestic industry. Further these import volumes constituted a very insignificant proportion when compared with their own production, Indian production and demand in the Country. Authority therefore holds that production of the petitioner companies constitutes a major proportion in Indian production. Domestic producers expressly supporting the application accounted for more than 50 percent of the production of the like product produced by the domestic industry. The application has been made by or on behalf of the domestic industry.

15. The Authority further holds that standing is not required to be established in a sunset review.

16. Subsequent to initiation, Pasupati Acrylon filed its costing and injury information. This was filed during the course of the investigations. The Authority holds that Vardhman Acrylon, Pasupati Acrylon and Indian Acrylics constitute domestic industry within the meaning of the Anti Dumping Rules.

## **DUMPING DETERMINATION**

### **M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand (TAF)**

17. Only one exporter/manufacturer, M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd. (TAF) has filed its questionnaire response. The information submitted by the exporter was also verified by the Authority as per the procedure prescribed and the dumping margin has been determined as follows.

### **Normal Value:**

18. TAF filed a detailed questionnaire response containing details of domestic as well as exports sales of the subject goods manufactured and sold by them. Authority found that the operations of the Company are essentially export oriented as verification of the records reveals.

that 80% of their production is exported to all over the world whereas only 20% is sold in the domestic market. For computation of Normal Value, domestic sales of the subject goods were considered based on the verified data. The element wise cost of production was also verified and reconciled from the books of account maintained by the company. An analysis of the profit and loss account of the company shows that the company has made an overall profit on the sale of subject goods during the period of investigation. The claims of the company with regard to cost of production were also verified and the cost of production of the company determined based on the information filed by the company and verified by the Authority. Based on the cost of production so determined, it was found that loss making domestic transactions were less than 20% of their total sales in the domestic market. It was further seen that sales to related customers in the domestic market were at arm's length with a reasonable profit margin on such sales and therefore all domestic sales were taken into account for computation of Normal Value. Normal Value at ex-factory level as worked out by the Authority taking into consideration all the above factors is as follows:

Weight (MT)	Baht	Exchange Rate	US \$
Selling Price	***	36.7351	***
Discounts	***		
Inland Freight	***		
Interest (Credit Cost)	***		
Normal Value	***		***

#### **Export Price:**

19. During the Period of Investigation, Thai Acrylic had exported \*\*\*MT Acrylic Fibre to India. The invoice-wise details of exports to India during the period of investigation were considered based on verified data. Price adjustments were considered in appendix-2 itself in respect of each sale transaction as detailed in the revised appendix 2 submitted during verification. Details regarding their claim of adjustments were verified during the course of verification from the records maintained by the company. The verified adjustments on per unit basis include export incentives of US\$ \*\*\*, Inland Freight US\$ \*\*\*, Credit Cost (Interest) US\$ \*\*\*, Overseas Freight US\$ \*\*\*, Overseas Insurance US\$ \*\*\*, Shipping Charges US\$ \*\*\*, Clearance and Handling Charges US\$ \*\*\*, and bank Charges US\$ \*\*\*. After allowing these adjustments the export price at ex-factory level as worked out by the Authority is US \$ \*\*\*per MT.

#### **Likelihood of continuation or recurrence of dumping from Thailand**

##### **Views of the Domestic Industry**

20. Thai Acrylic has been dumping acrylic fibre in the Indian Market at prices as low as Rs 58 per kg CIF as against the international prices of Rs 110 per kg. It has been represented that the statistics available at Indian Custom' EDI port as published by one of the leading research agency contribute to this view point. It has further been pleaded that Thai Acrylic has increased the dumping of acrylic fibre to Indian Market by diverting the subject goods from the Chinese market. It has been pleaded that, whereas, the Jan-May 2005 thru 2008 figures to China PR indicate the volume at 5822, 11868, 8398 and 2230 MT respectively in 2005, 2006, 2007 and 2008 respectively, the quantity during the corresponding period to India has been 1322, 721, 2137 and 5282 MT respectively.

21. The domestic industry has further represented that exports of acrylic fibre from Thailand to China have significantly declined with setting up of additional capacities in China. It is further been pleaded that the price at which Thai Acrylic Fibre is exporting the product to China is materially below the price at which they are exporting the same in the global market and therefore they are looking for market to get volumes in better prices than what they are getting in Chinese market. Relying upon United Nations commodity trade statistics data base, the DI has pleaded that Thai exports to China has decreased from 20676 MT in the year 2006 to 15793 MT during the year 2007 and in the year 2008, the volume has further fallen by 45%. Summing up their arguments, it has been pleaded that –

- (i) Global exports of acrylic fibre from Thailand have consistently increased except in the year 2007 when the same declined because of decline in Chinese exports.
- (ii) The volume of export from Thailand to China increased from about 605 MT in the year 2002 to over 20000 MT in 2006 but has declined in 2007 with a further decline in 2008.
- (iii) Exports to China are not viable for any exporter as the realization from Chinese market is much lower.
- (iv) Because of the enhanced capacity and reduced demand from China, Thai acrylic fibre is faced significant freely disposable capacity.

#### **Views of Thai Acrylic Fibre Company Ltd.**

22. Export prices to India were higher than the domestic selling prices by 1% in 2005 and 2% in 2006. But domestic selling prices were higher than export prices to India during POR by 2%. Export prices to India were higher than the export prices to other countries by 5% during 2005 and 2006. However, export prices to other countries increased significantly during POR and the gap between the export prices to India and other countries narrowed down to a mere 1%.

23. The average export prices to India increased from 100 in 2005 to 103 in 2006 and fell back to 100 during POR. Average export price to other countries increased from 100 in 2005 to 103 in 2006 and to 104 during POR. Average domestic sale prices in Thailand increased from 100 in 2005 to 102 in 2006 and further to 104 during POR. Thus, while average export prices to other countries as well as average domestic selling prices in Thailand showed an increasing trend throughout the injury analysis period, average export prices to India showed an increase in 2006 and a fall during POR.

24. It has further been pleaded that they have a strong presence in other countries and there is no likelihood of shifting supplies from those markets into India if the antidumping duty were terminated as there is no significant difference between export price to India and to other countries, though some increase in the quantities exported to India cannot be ruled out. Further, domestic selling prices are higher and the exporter has focused more on the domestic market during POR and is more likely to continue the focus on domestic market and other country markets. In view of the same, it is observed that volume of imports from Thailand is not likely to be significant if the existing antidumping duty were revoked. In view of the fact that there was no price undercutting and the export prices to India as well as other countries were within a narrow range, and the domestic selling prices in Thailand were higher than



export price to India, the exporter is unlikely to reduce the export prices to India if the duty were revoked.

### Examination By the Authority

25. In order to determine whether the dumping is likely to continue or recur in the future if the duties revoked the trend in volume of sales of the exporter and its prices in the home market and third country export markets have been examined by the Authority. The submissions made by the domestic industry have also been considered.

26. The Authority holds that continuance of dumping is established in view of the fact that Thai Acrylic has admitted selling subject goods to India at dumped prices during POI. Authority further holds that the subject goods are being exported to India at dumped prices in spite of antidumping duty remaining in force during this period.

27. Authority Perused World Trade Atlas data on Thai exports of subject goods to India which reveals that the CIF export price during POI stood at US \$2.08 per K.G whereas the same as per response of Thai Acrylic and subsequent verification stood at US\$ 2.03 per K.G.

28. Perusal of the statistics as reflected in the world trade atlas by the Authority also reveals that the exports of Thai origin acrylic fibre to China PR stood at 19221 MT during 2005-06 which has declined to 15247 MT in 2006-07 and further declined to 8592 MT in 2007-08. As far as the average unit price of the product under consideration from Thailand to China is concerned, it stood at 1.77 US \$ per kg in 2005-06 and US \$ 1.95 per kg during 2006-07 whereas the export prices to India for the same periods were reported at US\$ 1.83 and US\$ 2.08 per K.G respectively.

29. To make a fair comparison of prices to India compared to prices to other destinations in or around India, the producer / exporter (Thai Acrylic) was requested to provide details of export data to Third Countries during POI as also post POI by the Authority. Perusal of the data provided by the responding exporter revealed that as against a unit price of US\$\*\*\* per MT to India, they had exported to China at a unit price of US\$ \*\*\* per MT. Further as against a total export volume of \*\*\* MT to India during POI, the exports to China PR were \*\*\* MT. In post POI i.e. 2007-08, however, whereas the export volume to India had gone up to \*\*\*MT, the same in respect of China PR had come down to \*\*\* MT. In their submissions to the disclosure statement, TAF has not only admitted this position but has also confirmed a huge decline in their sales to Malaysia. They have further pleaded that their loss in Chinese and Malaysian markets has been compensated by increase of their exports to markets in Indonesia, Iran, South Korea, USA, Hong Kong and Vietnam. This is an indirect admission of effectiveness of antidumping measures in force in India but for which these surplus quantities would have found their way into Indian markets at dumped prices.

29A. yet another fact which has come to the notice of the Authority is the reduction in the duties on Acrylic Fibre from 10% to 1% in Thailand, as reported by the Department of Foreign Trade, Thailand, thereby directly contributing to reduction of domestic sales prices in Thailand. The claim of the exporter of having increased selling price to India should therefore have resulted in no dumping to India. The position has however been found to be contrary to this as, as per the own admission of TAF, they have been selling subject goods to India at dumped prices.

30. Authority therefore concludes that, there is some merit in the argument that prices are going to fall further and dumping is going to continue and intensify in case of either withdrawal or even reduction of ADD.

31. The authority holds that the submissions made by domestic industry that supplies to China post POI have considerably reduced in terms of volume are more or less corroborated by information available on the world trade atlas as also information provided by the responding exporter and verified during spot visit. The Authority therefore concludes that though the claim of Domestic Industry that Thai Acrylic Fibre exports to India are being done at a price of Rs. 58 per K.G is not substantiated, the trend as per WTA as also as per verified data indicates that, in all likelihood, with the surplus capacities available with Thai exporters and reduced supply to Chinese market, the product under consideration, may get diverted to India

32. The Authority also concludes that a reason for the subject goods continuing to come to India at dumped prices could perhaps be for the reason that the same are imported into India against Advance License, in which no antidumping duty is levied. However this aspect could not be verified by the Authority, because none of the importers of the subject goods cooperated and filed a questionnaire response to the initiation of the review. In their comments to the disclosure statement the responding exporter has confirmed this position. This clearly indicates that they have not been able to penetrate Indian markets because of effectiveness of the ADD measure in force. In a scenario where dumping has continued in spite of ADD in place, and in a scenario where there is recession in not one but two of their main markets, viz. China and Malaysia, the actual dumping margin is only of academic importance to decide likelihood situation after revocation of ADD. Their admission that most of their exports have primarily been against advance license is deterrent to the fact that when exports are made in normal course with duty to be paid by the importer in India, he will seek a lower export price thus resulting in a direct increase in the likely dumping margin.

32A. Authority notes that as per information available in the world trade atlas the export prices of Thai origin PUC to China were US \$ 1.75 per kg, US \$ 1.77 per kg and US \$ 1.95 per kg for the periods 2004-05, 2005-06 and 2006-07(POI) respectively. During the same period export price to India stood at US \$ 1.69 per kg, US \$ 1.83 per kg and US \$ 2.08 per kg respectively. Thus, the prices to various destinations in international market cannot be treated as stable. Analysing the price effect authority further notes that during the injury period through to POI the prices at which subject goods were exported to India were higher than the prices at which the PUC was exported to China, clearly indicating that they are capable of selling goods to India at the prices they have been exporting to China, thus likely to increase dumping margins in the event of reduction of anti-dumping duty. Further as per their own submissions prices to Philippines, Nepal, Hong Kong and Pakistan are lower than the prices to India during POI, thus confirming the apprehension of the authority that low priced PUC can be diverted to India in the event of reduction in the current level of anti-dumping.

#### **All other exporters from Thailand**

##### **Normal Value**

33. No other exporter from Thailand made any submission before the Authority in response to this review investigation. Normal value being country specific and not exporter

specific, the Authority therefore adopts the normal value determined for the cooperating exporter for Thailand, for all other exporters from Thailand as well.

### Export Price

34. The net export price has been determined by the Authority based on the lowest export transaction value from Thailand based on the export data of the cooperating exporter from Thailand, to India during POI after allowing adjustments at par with the ones allowed in respect of the cooperating exporter. The net export price at ex-factory level worked out by the Authority for all other exporters from Thailand is US \$ \*\*\* per MT.

### Dumping Margin for Korea RP

#### Normal Value

35. The Authority notes that none of the exporters from Korea RP have filed any response. As information about actual domestic sales price, information on exports to third country or cost of production in Korea RP and other information as per the questionnaire have not been furnished by the producers/exporters in that country; the Authority has therefore relied upon the best available information for determination of normal value. In the absence of any response, the petitioners have claimed that constructed normal value on the basis of estimated cost of production be taken into account for determination of Normal Value and subsequent computation of dumping margin. The Authority also tried to access various data bases to get to know the domestic selling price of the product under consideration in Korea RP but no such information was available.

36. In the absence of any response from the exporters from Korea RP in the form and manner prescribed and in the absence of any concrete information of domestic selling prices in Korea RP, the Authority has determined the normal value in Korea RP on the basis of construction by estimating cost of production in accordance with Rule 6(8) supra. The normal value has been constructed by adopting DGCI&S prices of major raw materials, i.e. Acrylonitrile (ACN) and Methyl Acetate (MA) and, best consumption factors for these raw materials and best known estimates of conversion cost during the relevant period of the domestic manufacturer from amongst the domestic industry. Selling, general & administrative costs and reasonable profit margin has been added to the cost of production so determined. The normal value so determined by the Authority for Korea RP is US \$ \*\*\* per MT.

#### Export Price

37. The Authority has taken into account transaction wise data from DGCI&S with regard to imports from Korea RP. The Authority notes that the DGCI&S information shows imports of 495 MT of Acrylic Fibre from Korea RP during POI. The Authority also perused the details of exports of subject goods to India from Korea RP as per information available in World Trade Atlas. As per WTA only 81 MT of subject goods were shown to have been exported to India during POI. Further as per WTA South Korea had exported 15956 MT of subject goods to world over during calendar year 2007 as compared to 362 MT of Acrylic Fibre to India during the same period. Therefore for volume analysis Authority finds it prudent to rely upon DGCI&S data and proposes to rely upon DGCI&S data for volume and injury analysis. Further as per DGCI&S data the CIF import price of Subject goods from

Korea RP stood at INR 94302/- (US \$ 2068) per MT which matches the CIF price of US \$ 2.06 per K.G as reflected in WTA. The Authority also notes that as per WTA the CIF price of Subject goods of Korean origin to world over during calendar year 2007 is US \$ 2.16 per K.G compared to CIF export price of US \$2.13 per K.G to India during the same period. Thus Authority considers the CIF price as per DGCI&S data source as reliable price for determination of net export price and subsequent determination of dumping and injury margins as the prices of Korean Subject Goods to world over are at a level higher than the prices to India. After making adjustments on account of export incentives, ocean freight, overseas insurance, inland freight, port expenses, bank charges, the ex-factory export price calculated by the Authority is US\$ \*\*\*per MT. The dumping margin thus calculated by the Authority is US\$ \*\*\* Per MT.

### **Likelihood of continuation or recurrence of dumping from Korea RP**

#### **Views of the Domestic Industry**

38. It has been pleaded that Korean exports of subject goods to China have declined significantly over a period of time. Relying on United Nations commodity trade statistics data base it has been pleaded that the Korean Exports of subject goods to China which stood at 16808 MT during 2005 has come down to 958 MT and 10259 MT during 2006 and 2007 respectively. It has further been pleaded that their global exports which stood at 21556 MT during the year 2005 has come down to 15956 MT and 16646 MT in the year 2006 and 2007 respectively.

#### **Examination by the Authority**

39. Authority after taking note of the submissions of the domestic industry and after perusing the data in world trade atlas concludes that Korean exports of subject goods to China PR stood at 20177 MT which has come down to 15135 MT and 9408 MT during 2005-06 and 2006-07 respectively, though the same has marginally increased to 11575 MT during 2007-08. The Authority also concludes that the prices of Korean origin acrylic fibre to China have gone up from US \$ 1.28 per kg in the year 2005-06 to US \$ 1.91 per kg during 2006-07 but has declined to US \$ 1.76 per kg during 2007-08, thus leaving a scope for the Korean exporters to divert the produce to Indian market to realize a higher realization, though still at dumped prices, in the event of either withdrawal or reduction of the anti-dumping duty from the present level.

40. Authority therefore concludes that ADD duty in place as on date has been effective and in case of reduction of the same, dumped imports from Korea will find their way into India.

#### **Dumping Margin**

41. The normal values determined at the ex-factory level has been compared with the respective net export prices determined at the ex-factory level to determine the dumping margins as follows:

Dumping Margin Calculations	Normal Value US\$/ MT	Export Price US\$/ MT	Dumping Margin	Dumping Margin %
M/s Thai Acrylic,	***	***	***	2-7%

<b>Thailand</b>				
<b>All Others exporters from Thailand</b>	***	***	***	<b>14-19%</b>
<b>Exporter/producer from Korea RP</b>	***	***	***	<b>7-12%</b>

42. The current dumping margins from the subject countries have been found by the Authority to be above de minimis.

### **Injury and Causal Link Determination**

#### **Views of the interested parties**

#### **Views of the Domestic Industry**

43. The domestic industry, in its submissions has inter alia argued as follows

- i. The imports from subject countries increased in absolute terms. Further, as held by the Designated Authority in the disclosure statement issued recently, potential increase in import volumes is far more, given that the foreign producers have enhanced capacities.
- ii. Selling price in the domestic market are directly linked to import prices. The domestic industry has to respond to lowest import price from various sources. Revocation of anti dumping duty shall imply prices of acrylic fibre from these countries declining in the market. Consequently, the domestic industry would be forced to reduce the selling prices.
- iii. Any decline in selling price would have its adverse impact on profitability, return on investment and cash profit situation of the domestic industry.
- iv. Two other companies - IPCL and Consolidated Fibre have been forced to suspend their operations relating to acrylic fibre in view of persistent dumping of the product in the Country. IPCL was suffering negative value addition in acrylic fibre. Considering the prices of captively produced acrylonitrile, the company was rather faced with negative value addition. Further, Consolidated Fibre was producing only acrylic fibre and has been forced to suspend their production. Injury to these two companies was due to persistent dumping of the product in the Country.
- v. The domestic industry has suffered injury from persistent dumping of the product in the Country. A number of these sources are either attracting anti dumping duties or duties have been recently revoked. Thus, the injury to the domestic industry in this sunset review investigation is required to be seen in the light of existing duties.
- vi. That the demand for acrylic fibre in India declined. However, while the acrylic fibre capacity in the world is far beyond the demand, Producers in subject countries have been expanding capacities without proportionate increase in their domestic demand, obviously considering export markets. Such capacity expansions are naturally at the peril of other producers.

- vii. The imports are still continuing at dumping prices and extent of dumped imports has remained at significant levels in the present investigations. The circumstances, which were prevalent at the time of original investigations, are very much in existence even till date. There has been no change in the circumstances, which only reflects that the dumping would recur at higher levels.
- viii. The capacity created by producer in Thailand is significantly higher than demand in their local market. Huge volume of exports being made by the petitioner to third country market makes it evident that the volume of imports would increase significantly in the event of revocation of ADD. Further it is the understanding of the domestic industry that petitioner is also expanding their capacity.
- ix. That the exports of the exporter to third countries are at significantly dumped prices.
- x. Production, capacity utilization, productivity, profits, return on investment, cash profits increased upto 2004-05 and declined in 2005-06. Even though there was some improvement once again in 2006-07, the levels achieved were below even the base year, leave aside natural improvements beyond those levels.
- xi. That it is evident that the domestic industry is facing continuous dumping of subject goods from the subject countries and other countries. However, there is no reason or justification to believe that revocation of the duty would not lead to increased or continued dumping at large scale with consequent injury to the domestic industry.
- xii. The imports from subject countries increased in absolute terms, resulting in increase in market share of imports.
- xiii. The profitability started declining when the dumped import prices led to a situation of price undercutting and price underselling.

#### **Views of M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand**

44. M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd. has made the following arguments on the issue of injury to the domestic industry:

- i. No Likelihood of continuance or recurrence of adverse volume effect of the domestic industry in view of following:
  - b. No significant increase in quantity of import in absolute term
  - c. No significant increase in quantity of import in relative to production
  - d. No significant increase in quantity of import in relative to consumption
- ii. No likelihood of recurrence of price undercutting by imports from Thailand
- iii. Imports did not affect the profitability of the domestic industry
- v. There is no causal link between imports and the injury claimed by the domestic industry detailed as follows.

- a. Vardhman is not injured and IAL's reasons for injury are internal
- b. The actual reasons for the current losses at IAL and Vardhman and general problems facing the global / Indian acrylic industry is due to substitution of acrylic fibre by polyester fibre and cotton.
- c. Acrylic fibre industry was pressed between surging raw material prices and stagnating demand for its products.
- d. The reasons mentioned in the respective director reports are the real reasons for the performance of Indian Acrylic Fibre industry and not the imports from Thai Acrylic fibre.
- e. Acrylic fibre Manufactured by IAL through dry spun fibre is not fit for hosiery applications.
- f. Closure of plants by IPCL and CFCL were due to very uneconomical capacities both in terms size and technology.
- g. That the Indian domestic producers export a significant quantity of their production to other countries. They have suffered significant losses in their export sales.

#### Views of other interested parties

##### Indian Spinners Association

45. The Indian Spinners Association, in its submissions has argued
- i. Consumers of acrylic fibre are now facing serious problems of high raw material cost while sourcing acrylic fibre because of anti dumping duty imposed.
  - ii. The acrylic yarn spinners in India prefer acrylic fibres produced through Japan Exlan Technology being superior qualities instead of Dry process produced Acrylic fibre thus after closure of CFCL there is insufficient capacity in India
  - iii. ADD has been maintained despite lower dumping margin of TAF
  - iv. VAL cannot meet the demand of exlan type of fibre
  - v. Feed stock price had gone up resulting in some increase in the price of acrylic fibre by the domestic industry
  - vi. Foreign producers are exporting the fibres to various countries in the world at similar prices
  - vii. Even when anti dumping duties has been in place on imports from Thailand for over 10 years, two plants already closed, indicating other cause of injury.

- viii. That antidumping duty has been imposed on almost all countries manufacturing acrylic fibre on the pretext of the FAFM. In the previous investigation the domestic industry claimed injury on cumulative basis for imports of acrylic fibre. But the scenario has changed and existence of injury to the domestic industry has almost ceased due to closure of several manufacturing units of acrylic fibre and fall in imports.
- ix. That the Acrylic Fibre Manufacturers have enjoyed monopoly under the effect of antidumping duty and there seems no recurrence of dumping that would lead to material injury to the domestic industry or likelihood of such injury.

**Ludhiana Spinners Association and Knitwear Club (Regd.)**

46. They have sought withdrawal of ADD on the premise that:

- i. Indian production has come down in 2006-07 from 2004-05 level considerably and is not sufficient to meet the domestic demand.
- ii. Yarn spinners in India prefer AF produced thru Japan Exlan Technology because of its inherent strength, better yarn quality, good colour uptake, and compactness in final garment. At present only Vardhman Acrylic Ltd. uses this technology but they consume most of their production captively and thus forcing the user industry to rely on imports.
- iii. High prices of the product under consideration has resulted into substitution by polyester and other fibres.
- iv. Demand exceeding supply, domestic producers are free to sell at best prices.
- vi. Domestic producers who get protection by way of ADD export their product world over at similar prices at which imports come to India without any ADD being imposed by such importing countries against Indian Imports.
- vii. The duty is already in place for more than 10 years and in spite of the same, major producers like CFCL and IPCL has closed down thus indicating uncompetitiveness of Indian Producers.
- viii. Even the producers have been importing the product under consideration from time to time.
- ix. The present dumping duty is being maintained at about a dumping margin of 12% as against a dumping margin of 2.53% assessed in the last Mid Term Review.

**Examination by the Authority**

47. The Authority has considered various arguments put forth by various interested parties in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority. The Authority concludes that the current dumping margins from the subject countries are above *de minimis*



level. The Authority therefore proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject countries.

### **Cumulative Assessment**

48. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:

- a. The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
- b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

49. The Authority concludes that it would be appropriate to cumulatively assess injury to the domestic industry from Thailand and Korea RP as detailed below:-

- i. The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed,
- ii. The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed,
- iii. Cumulative assessment is appropriate in view of the following factors
  - a. The goods involved are like articles and are competing in the same market;
  - b. The imported products are being sold through the same channel of distribution and to comparable category of customers;
  - c. Products from both the countries are undercutting the prices of the domestic industry in the market.
  - d. Imports from both the countries are increasing.

### **Current Injury and causal link**

50. Article 3.1 of the Act and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant

increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

51. For the purpose of current injury analysis, the Authority has cumulatively examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject countries on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. The Authority notes that antidumping duty is also in force on the subject goods being imported from a number of countries. Accordingly, the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

#### **Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry**

52. The effects of the volume of dumped imports from the subject countries as well as imports from other countries have been examined by the Authority as follows:

#### **Import volumes and share of subject countries:**

53. The domestic industry has argued that the DGCI&S data does not reflect the complete import data and the import volume is higher than that has been reported in the DGCI&S data. Since the import volumes shown in the final findings of MTR –II had already been verified by the Authority, the Authority proposes to adopt the same for the years 2003-04, 2004-05 and 2005-06 and for POI as per DGCI&S data source. As far as POI is concerned, the Authority perused World Trade Atlas Data to draw a comparison between exports volume of subject goods to India compared to the volumes to world over by Thai manufacturers and found that as per WTA, total exports of Acrylic Fibre to India from Thailand was 1857 MT as against 4389 MT reflected by Thai Acrylic alone in their response and subsequently verified by the Authority. On the contrary the data source DGCI&S reflects the import volume from Thailand as a whole at 2697 MT. Further as per WTA Thailand exported 50537 MT of subject goods to all over the world during the calendar year 2007 where as during the same period exports to India as per WTA stood at 2730 MT. Therefore the Data sources DGCI&S and WTA cannot be relied upon for volume analysis as they have captured incomplete data. The Authority therefore has adopted volume of imports as shown by the cooperating exporter from Thailand for the POI for the purposes of volume analysis. Accordingly the import volumes for the injury period were as under:

S.NO.	Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
1	Imports from subject countries	MT	3385	5187	3,985	4,884
2	Korea RP	MT	819	1,739	662	495
3	Thailand	MT	2,566	3,448	3,323	4,389
4.	Other Countries attracting duty	MT	9642	8218	3597	1745
5	Other countries	MT	791	1207	4615	5507
6	Total imports	MT	13,818	14,672	12,197	12136

54. The Authority found that import from the subject countries increased significantly in the POI by about 44% as compared to the base year. As far as Thailand is concerned the increase is 71% in POI compared to the base year 2003-04 and for Korea RP there is a decline by 40%. Imports from the other countries attracting duty has drastically declined by about 82% of the volume in the base year. However, import from other countries not subject to antidumping duty shows significant increase by about 596%. The countries included under this category are Egypt, Iran, DPR Korea, Latvia, Russia, Uzbekistan, Mexico, Brazil and European Union.

55. The Authority holds that the volume of imports from the subject countries was significant throughout the injury period in spite of the Antidumping duty being in place.

### Demand, Output and Market shares

#### Demand and Market Share

56. On the basis of verified data, the position with regard to demand and market share is as follows –

	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Total Imports	MT	13818	14672	12197	12136
Imports from Subject Countries	MT	3385	5187	3,985	4,884
Imports from other countries attracting Duty	MT	9642	8218	3597	1745
Imports from Others not attracting ADD	MT	791	1207	4615	5507
Sales of domestic industry	MT	66114	65504	68249	75197
Other Domestic Producers	MT	27500	31760	27138	1300
Domestic Demand	MT	107432	111935	107585	88633
Share in Demand					
Domestic Industry	%	61.54	58.52	63.44	84.84
Other Domestic Producers	%	25.60	28.37	25.23	1.46
Subject Countries	%	2.06	3.56	2.10	5.51
Others country attracting duty	%	8.98	7.34	3.34	1.96%
Others countries	%	1.83	2.21	5.89	6.21%

57. The above data shows that the domestic demand declined by about 18% in the POI compared to the base year. However, imports from subject countries and other countries not attracting ADD increased significantly over the present period, whereas import volume from other countries subject to antidumping duties have declined. The Authority concludes that the market share of imports from subject countries increased over the injury period in spite of antidumping duty being in place. Similarly the market share of the domestic industry also increased which was at the expense of other domestic producers who have either reduced their production or have exited from the industry as a whole, possibly on account of dumping and consequent injury. Authority further concludes that market share of Indian Producers as a whole however declined, though only marginally.

**Production of the Domestic Industry**

58. The table given below gives an overview of the installed capacity and production of the domestic industry over injury period thru POI.

	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Installed capacity	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	110	110	116
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	96	107
Capacity utilization	%	101.06	99.69	88.68	93.19
Trend	Index	100	99	88	92

59. Based upon above data, the Authority concludes that there is about 16% growth in capacity and 7% growth in production of the domestic industry. Capacity utilization of the domestic industry during POI compared to base year 2003-04 has increased by around 7% which is less by around 9% when it comes to increase in the overall capacity during the same period. While capacity and production of the domestic industry increased, the increase in production was less than increase in capacity. Resultantly it can be construed that the capacity utilization declined. Even though the capacity utilization increased in 2006-07, the same was lower than levels already achieved during 2004-05. The Authority also notes that the consumer association of the product complained about insufficient capacities in the Country. However, the verified data shows that the domestic industry could have produced and sold more although there appears to be a slight / marginal gap between demand and production of the domestic industry.

**Sales of Domestic Industry**

60. Information in the table below was Verified during DI verification.

Particulars	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	34	95	110
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	96	107
Domestic sales	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	99	103	108
Export sales	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	42	75
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	282	328	398

61. Authority has examined domestic and export sales separately. As per above data the Authority concludes that the domestic sales increased by 8% as compared to base year. Whereas, export sales of the domestic industry have declined during the same period

although compared to the immediately preceding year 2005-06, there is more than 90% increase in export sales in POI.

### **Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry**

62. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined by the Authority with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

### **Price undercutting and underselling effects**

63. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose, landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the DGCI&S data of import prices from the subject country.

64. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

65. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed price determined based upon average CIF of cooperating exporter to India for cooperating exporter from Thailand and minimum CIF price of exports to India for non-cooperating exporters from Thailand and DGCI&S price from exports to India from Korea PR has been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI and cost of production for the Injury Period.

Values in Rs/MT

Particulars	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Landed Value (Korea)	Rs./MT	***	***	***	***
Landed Value (Cooperating Thailand)	Rs./MT				***
Landed Value (Non-Cooperating Thailand)	Rs./MT				***
Price undercutting (Korea)	Rs./MT				-(***)
Price undercutting (Cooperating Thailand)	Rs./MT				***
Price undercutting (Non-Cooperating Thailand)					***
Price undercutting (Korea)	%				-(1.4%)
Price undercutting (Cooperating Thailand)	%				1-4%

Price undercutting (Non-Cooperating Thailand)					10-15%
Non Injurious Price	Rs./MT				***
Price Underselling (Korea)	Rs./MT				***
Price Underselling (Cooperating Thailand)	Rs./MT				***
Price Underselling (Non-Cooperating Thailand)					***
Price Underselling (Korea)	%				3-8%
Price Underselling (Cooperating Thailand)	%				4-9%
Price Underselling (Non-Cooperating Thailand)	%				15-20%

66. The Authority concludes that the landed value of imports from the subject countries caused significant price underselling, although no undercutting is noticed in case of Korea RP.

#### **Price suppression and depression effects of the dumped imports:**

67. The price suppression effects of the dumped imports have also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries. The above data shows that the cost of production of the subject goods have significantly increased compared to the base year as well as the previous year whereas the landed value of imports from subject countries has not increased commensurate to this increase in the cost of production.

#### **Examination of other Injury Parameters**

68. Other economic parameters, which could indicate existence of injury to the domestic industry, have been analyzed by the Authority as follows:

#### **Productivity**

69. Productivity of the domestic industry has been measured in terms of its labour productivity of the output and Authority concludes that the productivity has improved commensurate to increase in production.

Particulars	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Productivity per employee	***	***	***	***
Productivity per day	***	***	***	***

#### **Profits, return on capital employed and cash flow**

70. Verified information shows as follows

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	125	138
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	118	111	132
Profit/Loss	Rs. MT	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	303	-133	24
Total Profit/Loss on domestic sales	Rs. Lacs	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	300	-137	25
Depreciation	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	98	102	102
Cash Profit/Loss	Rs. Lacs	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	184	-0.36	69

71. The Authority concludes that performance of the domestic industry, in terms of profit and loss shows significant improvement till 2004-05, whereas the domestic industry has suffered substantial loss in the 2005-06. The Authority further concludes that even though the domestic industry was able to improve its profitability in the investigation period, the levels of profits realized were quite low. The levels achieved were lower than base year primarily because the selling price of domestic industry has not increased in proportion to the cost of production.

72. Cash profits and return on capital employed showed the same trend as that of profits.

#### Employment and wages

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Number of Employee	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	102	105	107
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	103	113	119
Wage per Employee	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	101	107	110

73. The Authority concludes that the employment level and wages do not show any deterioration of the condition of the domestic industry.

#### Return on Investment and Ability to raise capital

Particulars	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07 (POI)
Capital Employed	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	104	106	117
Profit	Rs. Lacs	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	300	-137	25

Interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	71	66	62
PBIT	Rs. Lacs	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	153	-7	49
Return on Capital Employed	%	***	***	(***)	***
Trend	Index	100	146	-6	42

74. The Authority notes that the domestic industry has made capacity addition during the POI and return on capital employed has considerably improved during POI compared to the immediate preceding period, although it is nowhere near the base period 2003-04 or 2004-05.

#### Factors affecting prices

75. The interested parties have argued that other factors such as inter fibre competition at the spinning industry level and low demand for acrylic fibre in India during the POI, decline in export performance has affected the prices of the subject goods manufactured and sold by the domestic industry. The Authority has examined the change in cost structure if any, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. Authority holds that Acrylic fibre is an economical substitute for wool and has several applications in apparel, household and industrial areas and continues to remain so because the price of the substitute product i.e. wool remains high. However, domestic demand has declined by about 18% during the POI. The Authority also holds that the participating producers of the subject goods account for about 85% of total domestic demand. The Authority further notes that two other producers of the subject goods have already suspended production, though out side the period of investigation.

#### Inventories

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Inventories - at the end of period	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	282	328	398
Inventories as % of Production	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	261	341	372

76. The inventory level of the domestic industry shows consistent increase over the injury period. However Authority holds that this could partially be because of addition in capacity and higher production levels.

#### Overall assessment of injury

77. The above examination by the Authority indicates that whereas the performance of the domestic industry has improved in terms of physical parameters such as capacity, production, capacity utilization and sales, the domestic industry's financial condition has marginally improved only in the POI.



### Other Known factors and Causal Link

78. As recorded earlier the exporters and other interested parties have raised several arguments in their written submissions during the course of the investigation which essentially argues that the domestic industry has improved its overall performance and injury if any, has been suffered because of factors other than the dumped imports. The arguments of the interested parties have been examined by the Authority with reference to mandatory factors and other factors that might have affected the condition of the domestic industry as follows:

### Volume and prices of imports from other sources

79. During the POI, other than the subject countries, imports have taken place from several other countries including countries against which antidumping duty is in force. The data also shows that imports from countries attracting antidumping duty have declined substantially. Imports from countries not attracting duty have increased. However, the goods have been imported from several countries and volumes of import from individual countries are small and at similar price bands.

### Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

80. The Authority concludes that domestic demand of the product under consideration has shown a decline of about 18% during the POI. The interested parties have argued that the drop in demand is due to substitution from acrylic fibre to polyester fibre and cotton. However Authority holds that contraction in demand does not seem to have affected the domestic industry in physical parameters in view of the fact that production and sales of the domestic industry and imports from the subject countries have increased during the POI.

### Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

81. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The participating domestic industry constitutes majority of the capacity in the country. The Authority concludes that though major proportions of imports from various other sources are attracting antidumping duty, antidumping duty unpaid landed value of imports from these sources is within a very narrow band indicating severe competition between various sources for the domestic market.

### Development of technology and export performance

82. The interested parties have argued that the technology and plants of the domestic industry are old and outdated. The Authority holds that world over acrylic fibres is manufactured using either dry technology or wet technology. Out of 5 producers in the country two producers use dry technology and three use wet technology to produce the same product. In terms of technological standards and cost of operation there is no significant difference. According to the Domestic Industry, both the technologies have coexisted for more than the history of acrylic fibre dumping in the Country. Domestic Industry have pleaded that IAL has done lot of job in other countries with regard to technology assistance in recent past, which confirms that the dry spun technology continues to be in considered even

by new plants. It has been pleaded that the receipt of various awards/recognitions by IAL is showing strong technology back up with the IAL. The other main domestic producer, PAL is also quite strong on scale and technology. None of the exporters or other importers opposing the imposition of duty has contested this with documentary evidence to the contrary. Further the Authority concludes that "developments in technology" is different from "difference in technology". The Rules provide for consideration of "developments in technology", as is evident from the Rules. Therefore, technological difference is not a factor affecting the performance of the domestic industry.

83. The Authority concludes that exports of the product under consideration by the domestic industry have declined substantially from the base year although there is a substantial increase in export sales during POI compared to 2005-06.

Particulars	UOM	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
Export sales		***	***	***	***
Trend	Index	100	107	42	75

84. The interested parties have argued that the exports by the domestic industry are at low prices, which might have caused injury to them. The Authority however holds that the volume of exports is less than 9% of their total sales and the price difference is also not very significant to contribute substantially to the injury of the domestic industry. Moreover, injury to the domestic industry has been assessed on the basis of their domestic performance only and injury, if any, caused due to their export performance has not been attributed to the dumped imports.

#### Productivity of the Domestic Industry

85. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown improvement. Therefore, the Authority holds that productivity is not a factor, which can be attributed to the injury of the domestic industry. In fact domestic industry has tried to reduce its losses in its domestic operation through improvement in productivity.

#### Magnitude of Injury and injury margin

86. The non-injurious price of the subject goods, determined by the Authority for the domestic industry taking into account the cost data of the domestic industry, has been compared with the landed value of imports from the subject countries for determination of the injury margin, which works out as follows:

Injury Margins	UOM	Thai Acrylic	Other exporters from Thailand	Korea RP
CIF Price	Rs./MT	***	***	***
Landed Value	Rs./MT	***	***	***
NIP	Rs./MT	***	***	***
Injury Margin	Rs./MT	***	***	***
Injury Margin	US\$/MT	***	***	***
Injury Margin %	%	5.02	17.25	4.13

### Likelihood of continuation or recurrence of injury

#### Submissions of the Domestic Industry

87. The domestic industry submitted as under in support of its claim of likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury.

- (a) The exports have continued at dumping prices.
- (b) The volume of exports has increased over the injury period.
- (c) The volume of imports from subject countries are likely to increase in the event of revocation of ADD for the following reasons –
  - i) The volume of exports from Thailand to world countries increased upto 2006, but declined in 2007, due to decline in their exports to Chinese markets.
  - ii) China has enhanced capacity for production of acrylic fibre. Consequently, TAF is faced with decline in its export volumes to China and is now looking for alternate markets.
  - iii) TAF export price to China are lower than India, domestic and other third countries. Therefore, TAF would be most willing to shift Chinese sales to Indian market.

#### Submissions made by Thai Acrylic

88. TAF has made following arguments in support of its claim that dumping and injury was unlikely in the event of revocation of ADD.

i. During the investigation period of the original investigation i.e. April 1995 to September 1995, imports from Thailand were 5496 MT as stated in the preliminary findings of the original investigation. This was before the imposition of measures. After the imposition of measures in 1997, imports from Thailand increased and peaked at 7228 MT during 1998-99. In the next 5 years, i.e. from 1999-00 to 2003-04, volume of imports from Thailand hovered around 2000 MT. In the next 3 years i.e. from 2004-05 to 2006-07, import volumes from Thailand were just about 3000 MT. During POI, it increased to 4389 MT, which was significantly lower than the levels achieved in 1998-99 post-imposition. Market share of the imports from the subject countries have remained constant at about 3%-4% during the injury analysis period for this review. Capacity of Thai Acrylic Fibre Co Ltd in Thailand increased from 82000 MT to 97000 MT and they were operating at full capacity throughout the injury analysis period. The exporter stated that there were no plans to augment additional capacity. The exporter from Thailand has a strong export orientation as may be seen from the table below:

	2005	2006	POI
Total Sales	***	***	***
DOMESTIC MARKET	***	***	***
EXPORT TO INDIA	***	***	***
EXPORTS TO OTHER COUNTRIES	***	***	***

WASTE SALES	***	***	***
DOMESTIC MARKET	4%	3%	20%
EXPORT TO INDIA	33%	22%	4%
EXPORTS TO OTHER COUNTRIES	61%	72%	72%
WASTE SALES	2%	3%	3%

ii. It has been argued that before augmentation of capacity, exports constituted 61% of their total sales. It increased to 72% after augmentation of capacity in 2006. It remained at the same level during POR. It was observed that exports to other countries had always been significant to the exporter and would continue to be a major thrust area. Exports to India were 33% of their total sales in 2005. It came down to 22% during 2006 and further to 4% in POR indicating that the company was not focusing on the exports to India. Further, loss in their share of sales to India was compensated by an increase in domestic sale within Thailand. Their domestic sales in Thailand constituted only 4% during 2005 and 3% during 2006 but it increased to 20% of their total sales during POR.

iii. The average selling prices to India were Baht. \*\*\* PMT, \*\*\* PMT and \*\*\*PMT during 2005, 2006 and POR as tabulated below:

	2005	2006	POR
Domestic Market	***	***	***
Domestic Market (indexed)	100	102	104
Export to India	***	***	***
Export to India (indexed)	100	103	100
Export to Other countries	***	***	***
Export to Other countries (indexed)	100	103	104
Difference export price to India and other countries	5%	5%	1%
Difference between domestic selling prices and export price to India	-1%	-2%	2%

iv. The domestic selling prices in India were lower than the landed values of the exports and price undercutting was negative throughout the injury analysis period.

v. Further it has also been pleaded that domestic industry has recorded significant positive improvements in production, sales, selling prices and profits. There was no price undercutting by the imports from subject countries. The performance of the domestic industry under various injury parameters had been positive and robust. Their ability to raise capital or investments is positive as they have increased their capacity during POR from 85000 MT to 90000 MT.

#### Examination by the Authority

89 The information provided by TAF and on the spot investigations conducted at their premises has been examined in detail in the section relating to dumping margin. The Authority has relied upon the same information for likelihood of injury determination also.

**FINAL FINDINGS:**

90. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties at various stages of investigation including submissions made as comments to the disclosure statement, and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margins of the subject goods imported from Thailand and Korea RP are substantial and above de-minimis.
- ii) The subject goods are likely to enter the Indian market at dumped prices and the likely dumping margins in respect of imports from Thailand and Korea RP is substantial and above de-minimis.
- iii) The subject goods are likely to enter Indian market at dumped prices, should the present measures be withdrawn.
- ii) Even though the domestic industry has improved its performance during the POI, the situation of domestic industry continues to be fragile and dumped imports from subject countries continue to cause a substantial injury to the domestic industry. Further, should the present anti dumping duties be revoked, injury to the domestic industry is likely to continue and intensify..

91. Having concluded that the situation of the domestic industry continues to be fragile and there is likelihood of continuation or resumption of dumping and injury on account of imports from Thailand and Korea RP, if the duties are revoked, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended in respect of imports from these countries.

92. Authority, having examined all the submissions made by interested parties, including those made in the form of comments to the Disclosure statement, concludes that the quantum of anti dumping duty in force need not be revised so far as both the subject countries are concerned. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends continuation of anti dumping duty on imports of subject goods from Thailand and Korea RP at the rates notified vide final findings Notification No. 26/1/2001-DGAD, dated 06.8.2002 and subsequently notified by the Central Government vide customs notification no. 106/2002 dated 9.10.2002, and extended vide customs notification No.113/2007 dated 16.11.2007.

93. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority